अनुक्रमणिका

क्रम	इकाई	प्रकार	पृष्ठ-संख्या
1.	पत्र एवं डायरी	पत्र	01
2.	कच्छ की सैर	यात्रावृत्त	11
3.	मत बाँटो इन्सान को	कविता	16
4.	कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री	रेखाचित्र	19
5.	दोहे	दोहे	28
•	पुनरावर्तन 1	–	31
6.	तूफ़ानों की ओर	कविता	33
7.	हार की जीत	कहानी	38
8.	हँसना मना है	चुटकुले	46
9.	उलझन-सुलझन	पहेलियाँ	50
•	पुनरावर्तन 2	–	55

1 पत्र एवं डायरी

अपने से दूर बसे संबंधियों, मित्रों, परिवारजनों तथा विभिन्न अधिकारियों को पत्र लिखने की आवश्यकता रहती है। पत्रों के द्वारा हम अपनी बात अत्यंत सुगमता से उन तक पहुँचा सकते हैं।

यद्यपि आजकल दूरभाष (telephone), तार (telegramme), ई-मेल, इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि द्वारा भी यह कार्य किया जाता है, फिर भी पत्रों का महत्त्व कम नहीं हुआ है, क्योंकि

- पत्रों के द्वारा विस्तार से अपनी बात व्यक्त की जा सकती है।
- पत्रों के द्वारा विचारों को प्रेषित करना अन्य साधनों की अपेक्षा सस्ता है।
- अधिकारियों तक अपनी बात पहुँचाने, शिकायत करने, आवेदन या प्रार्थना आदि के लिए केवल पत्रों का ही सहारा लिया जा सकता है, अन्य साधनों का नहीं।

पत्रलेखन

1. निमंत्रण पत्र

- **जन्मदिन के अवसर पर उपस्थित रहने के लिए मित्र को निमंत्रण पत्र।**

90, बुधनगर सोसायटी,
लिंबायत, सुरत-394210

8 अगस्त, 2011

प्रिय मित्र स्नेहल,

सप्रेम स्मरण।

तुम्हें यह जानकर खुशी होगी कि अगले रविवार को मेरा जन्मदिन है। इस बार तो छुट्टी के दिन ही मेरा जन्मदिन है, इसीलिए मैं अपने सभी मित्रों को बुलाना चाहता हूँ और उन सबको आज निमंत्रण भेज रहा हूँ।

तुम जानते ही हो कि सालगिरह का दिन कितने आनंद का दिन होता है। उस दिन हमारे कई रिश्तेदार भी यहाँ आयेंगे। बिपिन, साजिद, प्रशांत, सानिया आदि सब अवश्य आएँगे। मैं चाहता हूँ कि तुम भी उस दिन यहाँ जरूर आओ। यदि तुम नहीं आओगे तो हम सबको बुरा लगेगा। हम तो उस दिन सारा समय आनन्द में बिताना चाहते हैं। दिनभर भोजन, जलसा, खेल आदि होगा और रात को सिनेमा देखने भी जाएँगे। मुझे आशा है कि इस अवसर पर तुम जरूर आओगे और मेरे उत्साह और आनन्द को बढ़ाओगे।

तुम्हारे माता-पिता को सादर चरण स्पर्श। छोटे भाई कमल और बहन संगीता को प्यार। तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा करूँगा।

तुम्हारा मित्र,
साहिल शाह।

शब्दार्थ

रिश्तेदार सगे-संबंधी **उपस्थित** हाजिर **आगमन** आना

2. बधाई-पत्र

- **सालगिरह (जन्मदिन) पर बधाई पत्र।**

'शांतिसदन'
रावपुरा, बडौदा

10 अगस्त, 2011

प्रिय मित्र साहिल,

सप्रेम स्मरण।

कल ही तुम्हारा पत्र मिला, तो हम सब बहुत खुश हुए। तुम्हारी सालगिरह पर हमें तुम्हारा निमंत्रण भी मिला और यह जानकर विशेष प्रसन्नता हुई कि कल ही तुम्हारी सालगिरह है। इधर माँ कुछ दिनों से बीमार रहती है और पिताजी को तो सुबह दस बजे ही दफ़्तर जाना पड़ता है। दर्शना को भी सुबह स्कूल जाना पड़ता है और वह तो है भी छोटी। इसी कारण घर का बोझ मुझ पर ही है। अब तुम ही कहो, यह सारा बोझ किसको सौंपकर तुम से आ मिलूँ? मेरे दिल में तो बहुत होता है कि इस शुभ अवसर पर, उड़कर तुम्हारे पास आ जाऊँ। परन्तु घर की स्थिति का विचार करके विवश हो जाता हूँ और मन करते हुए भी नहीं आ सकता।

तुम तो अब एक साल बड़े हो गये हो। इस अवसर पर मैं तुम्हें बधाई क्यों न दूँ? मैं तो चाहता हूँ कि बार-बार तुम्हारी सालगिरह आया करे और हमें खुशियाँ मनाने का मौका मिले। इस मंगल अवसर पर उपस्थित न रह सकते हुए भी मेरे दिल में तुम्हारे लिए शुभकामना है। मैं चाहता हूँ कि ईश्वर तुम्हें चिरंजीव रखे और तुम्हारा नया वर्ष शुभदायी हो।

तुम्हारा मित्र,
स्नेहल।

शब्दार्थ

सालगिरह जन्मदिन **दफ़्तर** कार्यालय **मंगल** शुभ **विवश** बेबस **चिरंजीव** दीर्घायु

3. आश्वासन पत्र

- **खेल महाकुंभ में असफल (अच्छा प्रदर्शन नहीं करने पर) सखी को आश्वासन पत्र।**

'मातृछाया'
स्टेशन रोड, अहमदाबाद
17 नवम्बर, 2011

प्रिय सखी जागृति,

सप्रेम स्मृति।

आज तुम्हारे पिताजी से फोन द्वारा पता चला कि तुम खेल महाकुंभ में चक्रफेंक प्रतियोगिता में असफल हुई हो। इस समाचार से मुझे बहुत दु:ख हुआ कि तुम्हारा इस प्रतियोगिता में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। हमने तुमसे बहुत बड़ी आशा लगा रखी थी कि तुम जिले में प्रथम आओगी।

प्रिय सखी, खेल में हमेशा जीतना ही महत्त्वपूर्ण नहीं होता। अब जो कुछ होनेवाला था, हो गया है। इसीलिए उसका शोक न करना चाहिए और इस असफलता से निराश भी न होना चाहिए। असफलता भी सफलता का सोपान है। सफलता उन्हीं के चरण चूमती है, जो अपने ध्येयप्राप्ति के मार्ग में ड़टे रहते हैं। अब निराश या हतोत्साह होने से कोई फायदा नहीं है। मैं चाहती हूँ कि अब तुम दुगुने उत्साह से अभ्यास करो तो अगले साल तुम्हें अवश्य सफलता मिलेगी और तुम अपने जिले में ही नहीं गुजरात में प्रथम आओगी। मुझे आशा है कि तुम मेरी बात मानोगी और अपने कार्य में मनोयोग से लग जाओगी।

तुम्हारी सखी,
अवनी।

4. अनुमति पत्र

- **प्रवास में जाने की अनुमति के लिए पिता को पत्र।**

जीवनभारती छात्रालय,
स्टेशन रोड, दाहोद
29 सितंबर, 2011

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला। सबकी कुशलता जानकर बड़ी खुशी हुई। आप मेरी जरा भी चिंता न करें।

आपको सूचित करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि हमारी कक्षा के सब विद्यार्थी अगले महिने की 17 तारीख को अजंता-एलोरा की गुफाएँ देखने जानेवाले हैं। मैं भी उस प्रवास में सम्मिलित होना चाहता हूँ। स्कूल-बस की व्यवस्था की गई है। यह प्रवास तीन दिन का रहेगा और 800 रूपये का खर्च आएगा। इस प्रवास में बहुत से दर्शनीय स्थल देखने को मिलेंगे। मेरे सभी साथी मनीष, साहिल, श्रेया, जाकिर, वहिदा, गुरमीत और डेविड भी इस प्रवास में जानेवाले हैं। मैं भी इस प्रवास में शामिल होना चाहता हूँ। आप पत्र द्वारा इस प्रवास के लिए मुझे अनुमति देने और 800 रूपये मनीआर्डर से भेजने की कृपा करें।

पूज्य माताजी को सादर प्रणाम। सोनल को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
रमेश।

5. प्रार्थना-पत्र

- **छुट्टी के लिए प्रधान अध्यापक को पत्र।**

देसाई फलिया,
भावनगर
23 फरवरी, 2011

सेवा में,
श्री आचार्य महोदय,
डी. ए. सार्वजिनक विद्यालय

आदरणीय गुरुदेव,

सविनय निवेदन है कि मेरी बहन की शादी आगामी 27 तारीख को निश्चित की गई है। मैं उसका इकलौता भाई हूँ। हम लोगों के यहाँ शादी की कितनी धूम रहती है, इससे तो आप अनजान नहीं हैं। फलत: मैं ता. 24 से 28 - पाँच दिन तक विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सकूँगा। पिताजी का पत्र इस प्रार्थना-पत्र के साथ भेज रहा हूँ। आशा है आप मुझे यह अवकाश प्रदान करने की कृपा करेंगे।

इसके लिए मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी छात्र
मनोज पटेल
क्रमांक - 25, वर्ग - 8 अ

शब्दार्थ

इकलौता अकेला **फलत:** परिणामत: **धूम** धूमधाम **अवकाश** छुट्टी

6. कार्यालयी पत्र

- **स्वास्थ्य अधिकारी को गंदगी के बारे में शिकायती-पत्र।**

ता. 20 मई, 2011

सेवा में,

स्वास्थ्य अधिकारीश्री,
म्यूनिसिपैलिटी, बड़ौदा

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं 'गायत्री मुहल्ले' में रहता हूँ। यह मुहल्ला पिछले कई दिनों से ठीक साफ नहीं हुआ है। आज-कल शादी का मौसम है। रास्ते पर गंदगी फैली है। पास की कोठी (डस्टबिन) में सब जूठन डाल जाते हैं। बदबू के कारण पिछले दो दिन से तो यह हाल हो गया है कि वहाँ से आना-जाना भी मुश्किल हो गया है। आने-जाने वाले सभी लोग परेशान हो रहे हैं। यदि गंदगी को शीघ्र न हटाया गया तो मुहल्ले-भर में बीमारी फैल जाने का डर है।

आशा है आप शीघ्र ही उसे हटाने की व्यवस्था करेंगे।

आपका विनम्र सेवक
सुरेशभाई म. परमार
गायत्री मुहल्ला, बड़ौदा

7. व्यावसायिक पत्र

- **पुस्तकें भेजने के लिए पुस्तक-विक्रेता को पत्र।**

ता. 10 जुलाई, 2011

सेवा में,

व्यवस्थापक,
श्री गजानन पुस्तकालय, सुभाष रोड़, वलसाड़

महोदय,

मुझे निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है। आप डाक से भेजने की कृपा करें।

(1) नन्हा कोश - श्री रतिलाल नायक
(2) नालंदा विशाल शब्द सागर - श्री नवल जी
(3) बृहत हिन्दी शब्दकोश - डॉ. श्याम बहादुर वर्मा, डॉ. धर्मेन्द्र शर्मा
(4) साहित्यिक मुहावरा - लोकोक्ति कोश - हरिवंशराय शर्मा

कृपया उपर्युक्त पुस्तकें उचित कमीशन काटकर शीघ्र ही V.P.P. (Value Payable Post) से भेजें।

भवदीय,
प्रीति शाह
शांतिभवन, एम.जी.रोड, राजकोट

डायरी लेखन

'डायरी' शब्द आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा का है। 'डायरी' के लिए हिंदी में 'दैनंदिनी', 'दैनिकी' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। डायरी में निजी जीवन में प्रतिदिन घटित घटनाओं का लेखा-जोखा रखा जाता है। डायरी के पढ़ने से किसी व्यक्ति के जीवन में घटित घटनाओं, कार्यों या तथ्यों की जानकारी प्राप्त होती है। डायरी में व्यक्ति घटित घटनाओं के साथ-साथ अपने मन में उठी प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति भी अंकित करता है। इसलिए उसमें वैयक्तिकता होती है। डायरी प्रतिदिन, साप्ताहिक, पाक्षिक अथवा मासिक लिखी जा सकती है।

- **डायरी-लेखन की विशेषताएँ :**

  डायरी-लेखन में निम्नलिखित गुण होने आवश्यक हैं -

  (क) डायरी-लेखन में क्रमबद्धता हो।

  (ख) इसमें लिखा गया विवरण संक्षिप्त, सारगर्भित तथा वास्तविक हो।

  (ग) डायरी लेखन में स्थान, तिथि, घटना या तथ्य का स्पष्ट रूप से उल्लेख होना आवश्यक है।

  (घ) डायरी लेखन करते समय आलोचना, टीका-टिप्पणी, बनावटीपन, काल्पनिकता, चित्रात्मकता, अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए।

- **डायरी-लेखन के लाभ :**

  डायरी-लेखन के अनेक लाभ हैं -

  (क) इससे जीवन में घटी घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है।

  (ख) डायरी में तथ्यों का उल्लेख रहता है, इसी कारण व्यक्ति दिनभर जो अच्छे-बुरे काम करता है, उसका उल्लेख भी रहता है। इससे शनैः-शनैः बुराइयों से बचा जा सकता है।

  (ग) डायरी ही ऐसा दस्तावेज है जिसे पढ़कर किसी व्यक्ति के जीवन के पिछले अनुभवों तथा घटनाओं की जानकारी और वह भी संबंधित व्यक्ति के शब्दों में प्राप्त की जा सकती है।

- **डायरी-लेखन के उदाहरण :**

  (1) अपने नए विद्यालय में पहले दिन की घटनाओं को अपनी डायरी में लिखिए।

7 अगस्त, 2010, जामनगर

आज नए विद्यालय में मेरा पहला दिन था। मन में विभिन्न प्रकार के विचारों की उथल-पुथल चल रही थी तथा अनेक अनजानी आशंकाएँ अनायास ही मुझे डरा रही थी। 9:00 बजे पिता के साथ मैं अपने नए विद्यालय आदर्श मंदिर में पहुँचा। प्रधानाचार्य कक्ष में जाने पर उन्होंने मुझसे कुछ प्रश्न किए, जिनके मैंने उत्तर दे दिए। मेरे उत्तरों से वे संतुष्ट नज़र आए। उन्होंने मुझे प्रवेश के लिए निर्धारित फार्म दे दिया। मन को राहत मिली। थोड़ी ही देर में शुल्क आदि जमा करवाने के बाद मैं अपनी नई कक्षा में पहुँच गया। अपने नए दोस्तों, अध्यापक और आचार्य से मिलकर ऐसा नहीं लगा कि मैं नये विद्यालय में आ गया हूँ।

(2) वार्षिक परीक्षा के एक दिन पूर्व के अनुभव को अपनी डायरी में लिखिए।

5 अप्रैल 2012, राजकोट

कल वार्षिक परीक्षा का पहला दिन है। रात्रि के 1:00 बज गए हैं, परंतु नींद नहीं आ रही। कल विज्ञान और टेक्नोलॉजि विषय की परीक्षा है। यद्यपि सब कुछ दोहरा लिया है, तथापि मन में अजीब-सा भय है। अचानक पिताजी मेरे कमरे में आए। मुझे जगा हुआ देखकर ढाढ़स बँधाया और बिस्तर पर लेटने को कहा, बत्ती बंद कर दी। बिस्तर पर पड़े-पड़े भी नींद नहीं आ रही। पिताजी के चले जाने पर टेबल लैंप जलाया और पुस्तक के पन्ने पुनः पलटने लगा। थोड़ी देर में थककर बिस्तर पर पुनः लेट गया और न जाने कब नींद आ गई।

अभ्यास

प्रश्न 1. निर्देशित विषय के बारे में पत्र लिखिए :

(1) आपने की हुई यात्रा/प्रवास का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

(2) बीमारी के अवकाश के लिए कक्षा-शिक्षक को पत्र लिखिए।

(3) अपने स्कूल की किसी समस्या का प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

प्रश्न 2. सोचो और लिखो :

(1) अगर तुम्हें मोबाइल फोन पर अपने मित्र को एस.एम.एस. द्वारा बधाई संदेश भेजना है, तो क्या लिखोगे?

(2) तुमने इस बार छुट्टियों में क्या-क्या किया यह अपने मित्र को कम्प्यूटर पर ई-मेल द्वारा बताओगे तो क्या लिखोगे?

प्रश्न 3. दिए गए प्रशासकीय शब्दों के आधार पर वाक्य बनाइए :

(1) अधीक्षक (2) प्रभारी (3) आयकर (4) प्रशासन

प्रश्न 4. डायरी के रूप में लिखिए :

(1) अपने किसी एक पूरे दिन के अनुभव/विवरण।

(2) वार्षिकोत्सव पर आपको सर्वश्रेष्ठ वक्ता का पुरस्कार मिलने का अनुभव।

(3) आपके जीवन का सुखद अनुभव।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. नीचे दिए गए डायरी के अंश का अपनी मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :

आज दिनांक 10 अगस्त, 2011 रात को नींद नहीं आ रही थी। खुशी का ठिकाना न था। कब सुबह हो जाए इसका इंतजार था। स्कूल से सैर जाने के आनंद में कल्पना करते-करते मुझे नींद आ गई। बड़े सबेरे 4:00 बजे अलार्म बजा और मम्मी की आवाज़ आई, "राकेश उठो, चार बज गए।" मैं आनंद एवं उत्साह से उठा। मन में डर भी था की मास्टरजी डाँटे नहीं। स्नानादि से संपन्न होकर स्कूल पहुँचा। सब साथी आ पहुँचे थे। मास्टरजी ने सबको बस में बिठाया और हम सैर के लिए निकल पड़े।

योग्यता विस्तार

पत्र-लेखन के लिए ध्यान देने योग्य महत्त्वपूर्ण बातें

- पत्र में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- पत्र में आवश्यक बातें ही लिखनी चाहिए।
- पत्र अधिक लम्बा न होना चाहिए।
- मित्र या सखी के लिए 'तुम' सर्वनाम का तथा बड़ों के लिए 'आप' सर्वनाम का प्रयोग करना चाहिए।
- पत्र में सबसे ऊपर बायीं ओर अपना पूरा पता और तारीख़ लिखनी चाहिए।
- बायीं ओर पत्र जिसे लिखना हो उसको शिष्ट भाषा में सम्बोधन करना चाहिए। इसके बाद अभिवादन करना चाहिए।
- इसके बाद पत्र के कलेवर में मुख्य विषय को अभिव्यक्त करना चाहिए।
- पत्र समाप्त होने पर, नीचे बायीं ओर पत्र लिखनेवाले का सम्बन्ध और नाम लिखना चाहिए।

संबोधन, अभिवादन आदि की तालिका

पत्र का प्रकार	संबंध	अभिवादन संबंधी शब्द	पत्र की समाप्ति पर लिखी जाने वाली शब्दावली
व्यक्तिगत पत्र	पुत्र पिता को –	पूज्य/पूजनीय पिताजी	आपका आज्ञाकारी पुत्र
	पिता पुत्र को –	प्रिय/आयुष्मान (नाम)	तुम्हारा शुभचिंतक/शुभेच्छु
	पुत्र माता को –	पूज्या/पूजनीया माताजी	आपका आज्ञाकारी पुत्र
	माता पुत्र को –	प्रिय/आयुष्मान (नाम)	तुम्हारी माता/तुम्हारी शुभचिंतक
	छोटा भाई	आदरणीय भाई	आपका स्नेहाकांक्षी/स्नेहभाजन
	बड़े भाई को –		
	बड़ा भाई	प्रिय/चिरंजीव (नाम)	तुम्हारा शुभचिंतक/शुभेच्छु
	छोटे भाई को –	आयुष्मान (नाम)	
	बड़ा भाई	प्रिय (नाम)	तुम्हारा
	छोटी बहन को	आयुष्मती (नाम)	शुभचिंतक/शुभेच्छु
	मित्र/मित्र को	प्रिय (नाम)	अभिन्न हृदय/तुम्हारा मित्र/ तुम्हारी सखी/तुम्हारा शुभचिंतक
	शिष्य–गुरु को	पूजनीय/श्रद्धेय गुरुजी	आपका आज्ञाकारी शिष्य/ आपका स्नेहभाजन
	गुरु–शिष्य को	चिरंजीव (नाम)	तुम्हारा शुभाकांक्षी/शुभचिंतक

व्यावसायिक पत्र	पुस्तक विक्रेता को – बैंक मैनेजर को – व्यापारी या दुकानदार को –	महोदय, महोदय, श्रीमान प्रबंधक	भवदीय भवदीय भवदीय
कार्यालयी पत्र	किसी विभाग के अधिकारी को – समाचार पत्र के संपादक को –	मान्यवर, मान्यवर महोदय श्रीमान संपादक महोदय	भवदीय, निवेदक, प्रार्थी, विनीत भवदीय, निवेदक
प्रार्थना पत्र	प्रधानाचार्य को – किसी अधिकारी को –	श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय मान्यवर महोदय	विनीत, प्रार्थी, कृपाकांक्षी, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या, निवेदक, प्रार्थी, विनीत, निवेदिका

डायरी के संदर्भ में

ध्यान रखिए,

डायरी और आत्मकथा (Autobiography) दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं, क्योंकि आत्मकथा का संबंध जीवन की समूची अनुभूतियों का व्यवस्थित विवरण होता है जबकि डायरी में दैनिक जीवन में घटनेवाली घटनाओं तथा तथ्यों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होती है।

- अपने पुस्तकालय से विभिन्न प्रकार के पत्र व डायरी से संबंधित पुस्तकें पढ़ें।
- बड़ों से पूछकर पता करो : हम जो पत्र लिखते हैं, वे दूसरों तक कैसे पहुँचते हैं? कौन ले जाता है, हम तक कौन पहुँचाता है, पत्र कहाँ इकट्ठे होते हैं?
- आज कल पत्र किस-किस माध्यम से एक दूसरे त जाते हैं?
- जिस क्षेत्र में आप रहते हैं, वहाँ का पिन (पोस्ट इन्डेक्स नंबर) कोड़ क्या है?
- आप के घर डाक देने कौन आता है? उनसे मुलाकात लेकर कोई पाँच प्रश्न पूछिए। प्रश्न और उनके उत्तर लिखिए।

संदेशा व्यवहार के चित्र देखिए और समझिये।

(1)

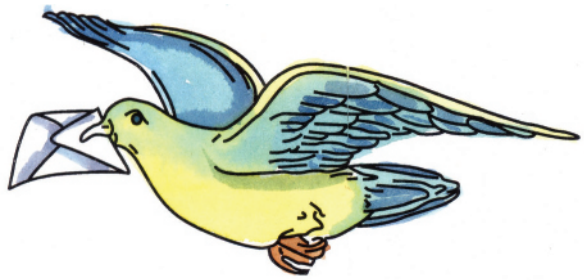

(2)

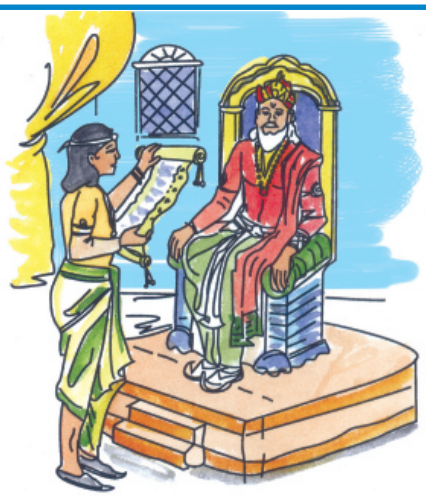

(3)

(4)

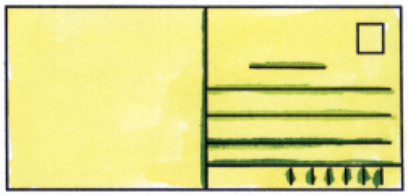

(5)

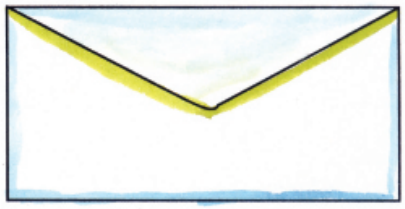

(6)

(7)

- प्रकल्प कार्य (प्रोजेक्ट वर्क) : विविध डाक टिकटों का संकलन कीजिए।

2 कच्छ की सैर

श्री हरेश धोलकिया

कच्छ निवासी **हरेश धोलकिया** अध्यापक थे। शिक्षकत्व आपकी पहचान बन गई है। पूर्व राष्ट्रपति श्री ए.पी.जे. अब्दूल कलाम के बहुचर्चित 'Wings of Fire' पुस्तक का आपने गुजराती भाषा में अनुवाद 'अगनपंख' शीर्षक से किया है। शिक्षणकार्य के आपके अनुभव, संशोधनात्मक लेखनकार्य तथा पत्रकारत्व आपके लेखन के क्षेत्र हैं। 'कच्छमित्र' में आप 'सुरखाब' स्तंभ अंतर्गत लिखते हैं। आपका सर्जनकार्य 'अंगदनो पग', 'चारसो टका आनंद' तथा शिक्षणसंबंधी साहित्य लोकिप्रय है।

प्रस्तुत इकाई में आपने कच्छ का परिचय कराने का प्रयास किया है। जिसमें कच्छ एवं इर्द-गिर्द के दर्शनीय स्थानों का परिचय कराया है।

इस इकाई में अपनी संस्कृति का आदर, अपनी विरासत का संरक्षण, देशप्रेम आदि मूल्यों को विकसित किया गया है।

यहाँ आपकी रचना 'कच्छयात्रा' का भावानुवाद प्रस्तुत है।

यात्रावृत्त

विशाल भारत में अनेक दर्शनीय प्रांत हैं। सब का अपना महत्त्व एवं सौंदर्य है। गुजरात उनमें से एक अनूठा राज्य है। गुजरात में एक विशेष जिला है 'कच्छ'। जो गुजरात का अत्यंत रमणीय प्रदेश है। यात्रियों के लिए कच्छ आकर्षण का केन्द्र है। इसका पौराणिक महत्त्व भी कम नहीं। अनेक दर्शनीय स्थानों के वैविध्य के कारण इसे 'म्युझियम' (संग्रहालय) कह सकते हैं।

कच्छ में प्रवेश करते ही हमें रेगिस्तान के दो स्वरूप देखने को मिलते हैं - एक छोटा रेगिस्तान और दूसरा बड़ा रेगिस्तान। इन दोनों में रेगिस्तान जैसा कोई लक्षण नहीं दिखाई देता। रेत कहीं नज़र नहीं आती, अतः यह अनूठा रेगिस्तान है।

सामखीयाली को हम कच्छ का प्रवेशद्वार कह सकते हैं, कच्छ की यात्रा यहीं से आरंभ होती है। यहाँ से उत्तर दिशा की ओर यात्रा का प्रारंभ होता है। रापर से धोलावीरा पहुँचते ही हमारी प्राचीन संस्कृति मोहन-जो-दड़ो का स्मरण हो जाता है। यह स्थान 5000 वर्ष के अवशेषों का हिस्सा है। इस प्राचीन नगरी के दर्शन से ही हम चकित रह जाते हैं। हमें प्राचीनता में आधुनिकता के दर्शन होते हैं।

सामखीयाली से पश्चिम की यात्रा करते भचाउ नजर आता है, जो बड़ा गाँव है जैसे नगर। वहाँ से गांधीधाम औद्योगिक कारखानों का शहर है, यहाँ सिंधी प्रजा पाकिस्तान से आकर स्थायी हुई है। गांधीधाम, आदीपुर तथा गोपालपुरी उद्योगों के कारण विकसित हुए दिखाई देते हैं। आदीपुर में गांधीस्मृति का स्थान तथा पास ही कंडला बंदरगाह का बड़ा महत्त्व है। कंडला का विकास वहाँ की प्रजा के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कंडला से दक्षिण की ओर भद्रेश्वर अति प्राचीन जैन-यात्राधाम है। संगमरमर से बना 2500 वर्ष पुराना जिनालय भूकंप में खंडित हुआ, उसके पुनःनिर्माण का कार्य जोरों से चल रहा है। इसे आधुनिकता का स्पर्श मिला है। मुन्द्रा शहर तहसिल भी है। यहाँ अनेक उद्योगों के कारण विकास की दिशा खुली है। समुद्र के किनारे बंदरगाह विकसित हुआ है। यहाँ कुछ प्राचीन इमारतें हैं। समुद्र के किनारे तटीय यात्रा करते हुए हम मांडवी पहुँचे। मांडवी अति सुंदर बंदरगाह है। बड़ा प्राचीन नगर है। इस शहर में राजा का महल, पवनचक्कियाँ तथा समुद्रतट के कारण अधिक दर्शनीय बना है। यहाँ वी.आर.टी.आइ. ग्राम्य संस्था है, बहत्तर जिनालय हैं, पास ही बीदडा गाँव में आंतरराष्ट्रिय अस्पताल है। मांडवी से आगे चलते डुमरा, कोठीरा, सुघरी और जखो महत्त्वपूर्ण गाँव है। जैनों का प्राधान्य यहाँ नज़र आता है। नलिया शहर तहसिली केन्द्र है। यहाँ हवाई सेना का मुख्य अड्डा है।

नलिया से एक घण्टे की यात्रा करते 'नारायण सरोवर' - अति प्राचीन, पौराणिक, धार्मिक स्थान है। इस स्थान को रामायण काल का माना जाता है। वहाँ कोटेश्वर नामक दर्शनीय मंदिर है, जहाँ से रावण गुजरा था, यह पूरे भारत का प्राचीन स्थान माना जाता है। सूर्योदय और सूर्यास्त दर्शन यहाँ का बड़ा आकर्षण है।

नारायण सरोवर से आगे की यात्रा में 'लखपत' आता है जो अति प्राचीन स्थल है। गुरु नानक की चरणरज से पावन इस भूमि पर गुरुद्वारा है। एक समय का समृद्ध स्थान आज जीर्णावस्था में होते हुए भी दर्शनीय है। यहाँ एक किला है, उसके बगल में पानध्रो खनिज संपत्ति के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही विद्युत निर्माण का यह केन्द्र है।

लखपत से मध्य कच्छ की ओर बढ़ते हुए हाजीपीर मुसलमानों के लिए श्रद्धा का केन्द्र है। यहाँ पीर का मज़ार है। रेगिस्तान की झांकी यहाँ से होती है। रास्ते में 'माता का मढ़' नामक धार्मिक स्थान है। जहाँ नवरात्री के पर्व पर लोग पदयात्रा करते हुए श्रद्धा भाव से दर्शनार्थ आते हैं। आगे नखत्राणा प्राकृतिक नज़ारों का केन्द्र बना है। रास्ते में चक्ष, पुरेश्वर मंदिर, वांढाय जैसे मनोहारी प्राचीन स्थान हैं।

अब कच्छ का मुख्य केन्द्र भूज आते ही उसके वैभव का परिचय होता है। आयना महल, प्रागमहल, टावर, स्वामिनारायण मंदिर, हिलगार्डन, हमीरसर तालाब, भूजिया पहाड़, लोक संग्रहालय, विश्व विद्यालय आदि के दर्शन करके हम आनंद ले सकते हैं। सन 2001 के भूचाल ने इसे खंड़ित किया, तो लोगों ने उसे नए स्वरूप में पुन: निर्माण करके और सुंदर शहर बना दिया है।

भूज से उत्तर दिशा की ओर खावडा में 'काला डुंगर' पहाड़ है। पहाड़ पर चढ़कर रेगिस्तान की झाँकी करना एक अनूठा अनुभव है। सरकार एवं स्थानिक जनता द्वारा 'रणोत्सव' का आयोजन होता है। देशभर से लोग यहाँ आते हैं। सफेद रेगिस्तान को देखना एक आनंददायी घटना है।

भूज से अंजार भी जाया जाता है। आगे बढ़ते हुए 'सृजन' संस्था में यहाँ की प्रजा की हस्तकला का परिचय होता है। जेसल-तोरल की स्मृति में मंदिर बना है जो ऐतिहासिक स्थान है। यहाँ से आदीपुर तथा गाँधीधाम जा सकते हैं। 'सूरजबारी' नामक स्थान से हमारी कच्छ यात्रा पूर्ण होती है, जो अविस्मरणीय स्मृतियाँ छोड़ जाती है।

कहा जाता है ''कच्छ नहीं देखा तो कुछ नहीं देखा!'' कच्छ गुजरात का गौरव है और दुनिया भर के लोगों के लिए किसी भी मौसम में दर्शनीय एवं आकर्षण का केन्द्र है।

अनुवादक : श्री महेशभाई उपाध्याय

शब्दार्थ

अनूठा अनोखा, विशिष्ठ **रेगिस्तान** मरुभूमि **जीर्णोद्धार** पुन:निर्माण **मज़ार** दरगाह **गुरुद्वारा** शीखों का धार्मिक स्थल **भूचाल** भूकंप

अभ्यास

प्रश्न 1. निम्नलिखित मुद्दों के संदर्भ में चार-पाँच वाक्य बोलिए :

(1) मरुभूमि / रेगिस्तान

(2) कच्छ के तीन बड़े शहर

(3) कच्छ में स्थित धार्मिक स्थल

(4) कच्छ के ऐतिहासिक स्थल

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) आप अपनी पाठशाला में से किसी यात्रा पर गए हो तो उनका वर्णन अपने शब्दो में कीजिए।

(2) आपने की हुई किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्रश्न 3. दिये गए शब्द मिले ऐसी पहेलियों का निर्माण कीजिए :

(1) सितारा (2) हाथी (3) चिराग (4) पाठशाला

स्वाध्याय

प्रश्न 1. दिये गए शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए :

अभ्यास, विनय, संध्या, प्रगति, अभिवादन,
महकना, संग्राम, शायर, हमदर्द, चिराग

प्रश्न 2. प्रशासकीय शब्दों की सूची बनाकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 3. दिये गए विशेषणों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

दयावान, मूल्यवान, कृपालु, थोड़ा-सा, अच्छा, सुंदर, प्रिय

प्रश्न 4. दिये गए परिच्छेद का राष्ट्रभाषा में अनुवाद कीजिए :

હિરણ નદીની પશ્ચિમ બાજુએ સૂરજદાદા વિદાય લઈ રહ્યા છે, સંધ્યાટાણે પંખીઓનાં ટોળાં પોતાના માળા ભણી ઊડી રહ્યાં છે, ભેંસોનું ખાડુ અને ગાયોનાં ધણ પોતાના માલિકના ઘર ભણી વળી રહ્યાં છે ત્યારે ઝરમર ઝરમર વર્ષાની શરૂઆત થઈ. સૌ અસહ્ય ગરમીની પીડામાંથી મુક્તિનો આનંદ લઈ રહ્યાં હતાં. માત્ર માનવ જ નહીં પશુ-પક્ષી અને જીવ-જંતુ પણ શાતા અનુભવવા લાગ્યાં.

प्रश्न 5. अपूर्ण कहानी पूर्ण कीजिए :

एक गाँव था। उस गाँव में एक गरीब किसान रहता था। उनके दो बेटे थे, बड़े का नाम रामू और छोटे का नाम...

योग्यता विस्तार

- कच्छ के बारे में अधिक जानकारी दीजिए।
- कच्छ के दर्शनीय स्थलों के चित्र इकट्ठे कीजिए।
- कच्छ की यात्रा का आयोजन कीजिए। जिसमें साथ में ले जाने की चीज़ें तथा यात्रा के स्थानों का क्रम बनाकर यात्रा का नकशा, रूपरेखा तैयार कीजिए।
- अपने जिले के दर्शनीय स्थलों के चित्र एवं उनकी विशेषता के आधार प्रकल्प कार्य (प्रोजेक्ट वर्क) करवाइए ।

3 मत बाँटो इन्सान को

विनय महाजन

इस कविता में विनय महाजन जी ने मनुष्य को मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा दी है। मनुष्य को किसी भी भेदभाव में नहीं पड़ना चाहिए। हमें सभी भेदभावों को भुलाकर एकता की दृष्टि से इस संसार को देखना चाहिए। यह प्रकृति भी हमें निरंतर यही उपदेश देती है।

इस कविता में एकता, मिल-जुलकर रहना, समानता आदि मूल्य समाविष्ट हैं।

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को॥

अभी राह तो शुरू हुई है
मंज़िल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी
हर दीपक मजबूर है॥

मिला न सूरज का संदेशा
हर घाटी-मैदान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को॥

अब भी हरी-भरी धरती है
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूना
जलता रेगिस्तान है॥

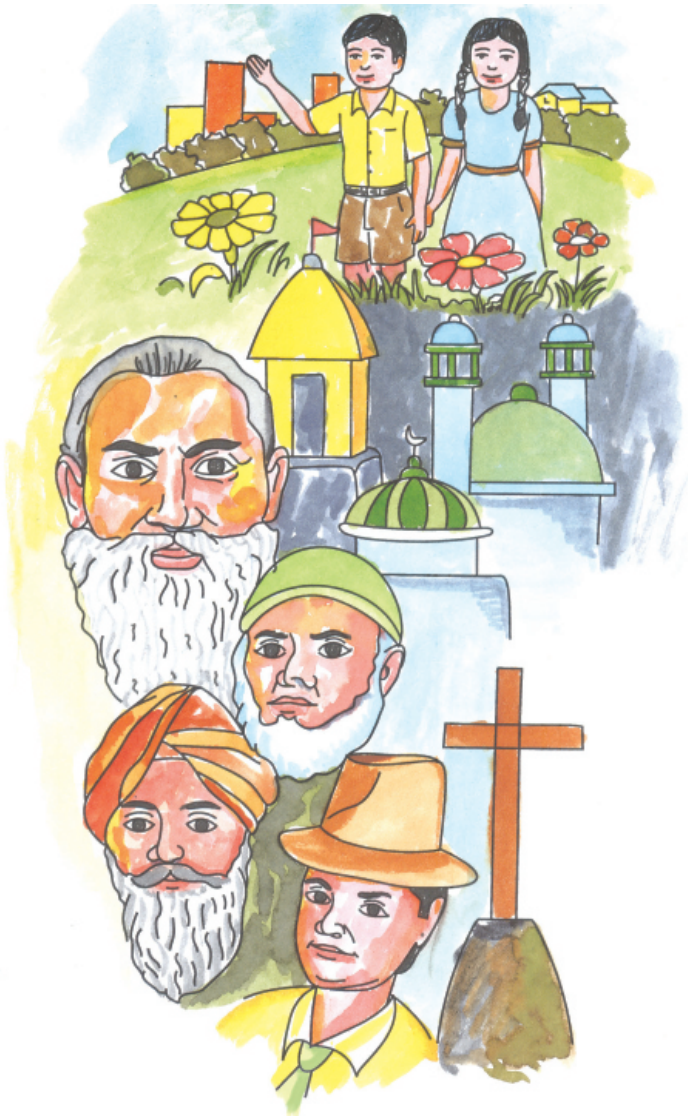

अभी प्यार का जल देना है
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को॥

साथ उठें सब तो पहरा हो
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगन का हक हो
खिलती हुई बहार पर॥

रौंद न पाएगा फिर कोई
मौसम की मुसकान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा
मत बाँटो इंसान को॥

– विनय महाजन

शब्दार्थ

राह रास्ता, मार्ग **उजियाला** उजाला, रोशनी **बंदी** कैदी, गुलाम **वितान** विस्तार, अवकाश **चट्टान** शिलाखंड, बडा पत्थर **पहरा** सुरक्षा, रखवाली **रौंदना** कुचलना **मंजिल** लक्ष्य, गंतव्य स्थान **मजबूर** विवश, असहाय **रेगिस्तान** मरुस्थल **बाँटना** विभाजित करना **घाटी** दो पहाड़ों के बीच गहरा स्थान **बहार** सुखद वातावरण, शोभा, वसंत

अभ्यास

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) इंसान को बाँटने का अर्थ क्या है?

(2) लोगों ने भगवान को किस प्रकार बाँट लिया है?

(3) चट्टानों की प्यास कैसे बुझाई जा सकती है?

प्रश्न 2. इस काव्य को आरोह-अवरोह के साथ गाइए तथा समूहगान कीजिए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित काव्यपंक्ति का भावार्थ बताइए :

अभी राह तो शुरू हुई है मंज़िल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी हर दीपक मजबूर है॥

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कविता के अनुसार अब तक किन चीजों का बँटवारा हो चूका है?

(2) किसकी मुसकान को कोई रौंद नहीं पाएगा?

(3) हरी-भरी धरती को कौन-सी परिस्थितियाँ रेगिस्तान में बदल सकती है?

(4) उजाले को बंदी बनाने का क्या अर्थ है?

(5) यह कविता हमें क्या संदेश देती है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश के क्रम में लिखिए :

प्यासी, आँगन, सागर, इंसान, वितान, ऊपर, रेगिस्तान,
मंज़िल, घाटी, गिरजाघर, मुसकान, चट्टान, उदास, बंदी

प्रश्न 3. आज के इस आधुनिक परिवेश में संयुक्त परिवारों की जगह विभक्त परिवारों ने ले ली है। विभक्त परिवार के पक्ष-विपक्ष पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

प्रश्न 4. अपूर्ण काव्य को पूर्ण कीजिए :

रात होने पर मैं निकलता
सबको देता हूँ शीतलता।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

योग्यता विस्तार

- प्रकल्प (परियोजना) कार्य (Project Work) :

  राष्ट्रीय एकता के गीतों का संग्रह कीजिए।
- भारत के मानचित्र (नकशा) में निम्नलिखित स्थल खोजिए और उनके विषय में सचित्र जानकारी एकत्र कीजिए।

  जामा मस्जिद - स्वर्ण मंदिर - तिरुपति बालाजी मंदिर - उदवाड़ा - माउन्ट मेरी चर्च, मुंबई
- कक्षा-7 का काव्य 'हिन्द देश के निवासी' का अभिनय सहित गान करवाइए।

4 कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री

शंकरदयाल शर्मा

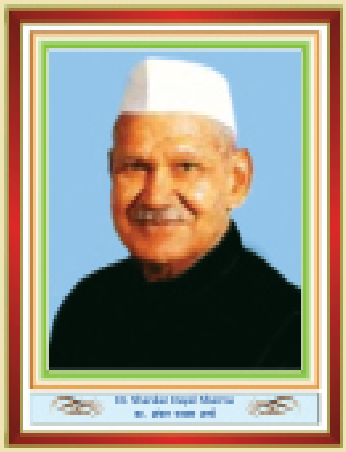

भारत के नौवें राष्ट्रपति श्री शंकरदयाल शर्मा का जन्म भोपाल (म.प्र.) में हुआ था। आपकी आरंभिक शिक्षा मध्यप्रदेश में हुई। आगे की पढ़ाई आपने क्रमशः आगरा, इलाहाबाद तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में की तथा एम.ए., एलएल.बी. की उपाधियाँ प्राप्त की, बाद में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की और वहीं पर एक वर्ष तक प्रवक्ता रहे। तत्पश्चात् भारत लौटकर आप राजनीति में सक्रिय हुए। विधायक और सांसद के रूप में आरंभ हुई। आपकी राजनीतिक यात्रा राज्यपाल, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति के सर्वोच्च पद पर जाकर समाप्त हुई। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में आपने अनेक पुस्तकें लिखीं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं – 'देशमणि', 'हमारे पथप्रदर्शक', 'प्रतिष्ठित भारतीय' तथा 'हमारे चिंतन की मूलधारा'।

'कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री' रेखाचित्र में लेखक महोदय शास्त्री जी के व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं कि अपनी कर्मठता के गुण के कारण लालबहादुर शास्त्री एक अति सामान्य परिवार से उठकर देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे। वे कर्म को ही ईश्वर मानते थे। कर्म के प्रति अटल आस्था एवं संपूर्ण समर्पण उनके जीवन विकास का मूलाधार था।

इस इकाई में समाविष्ट मूल्य : समर्पण भावना, कर्तव्यनिष्ठा, कर्मठता, सेवा।

शास्त्री जी के नाम के साथ 'कर्मयोगी' विशेषण जोड़ना बिलकुल उपयुक्त है, क्योंकि मुझे तो उनका सारा जीवन ही कर्म से भरा हुआ मालूम पड़ता है। शास्त्री जी सामान्य परिवार से ऊपर उठकर देश के प्रधानमंत्री के जिस महत्त्वपूर्ण पद तक पहुँचे, उसका रहस्य उनके कर्मयोगी होने में ही छिपा हुआ है। वह उन लोगों में

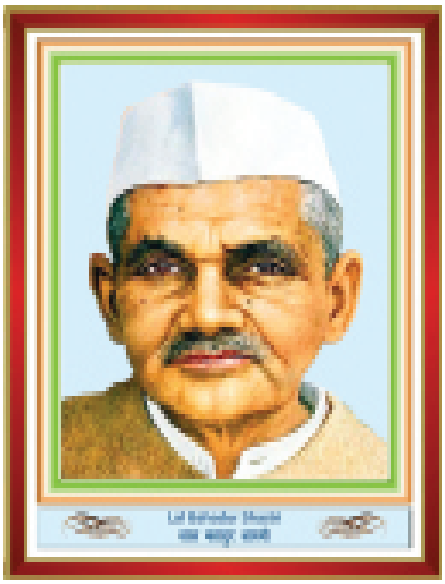

भी नहीं थे, जो भाग्य पर भरोसा करके बैठे रहते हैं और अचानक कभी सफलता मिल जाती है। बल्कि वह उन लोगों में से थे, जिनको अपनी हथेली की लकीरों के बजाय अपने चिंतन और कर्म की शक्ति पर अधिक भरोसा होता है और वे क्रमशः अपने जीवन का रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ते हैं। शास्त्री जी के लिए कर्म ही ईश्वर था और इसके प्रति वह बिना किसी फल की आशा किए संपूर्ण भाव से समर्पित रहते थे। यहाँ तक कि जब भी उन्हें फल की प्राप्ति के अवसर मिले, तब भी उन्होंने उस ओर हमेशा उपेक्षित दृष्टि ही रखी। उनका जीवन-दर्शन 'गीता' के निष्काम कर्मयोगी का प्रतिरूप था। इसलिए मैं समझता हूँ कि उन्हें केवल कर्मयोगी के बजाय 'निष्काम कर्मयोगी' कहना कहीं अधिक उपयुक्त होगा।

अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ आस्था, उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कर्म का भाव तथा उस कर्म के प्रति संपूर्ण समर्पण – ये तीन बातें – मुझे उनके संपूर्ण चरित्र तथा जीवन-दर्शन में दिखाई पड़ती हैं। अपने एक भाषण में उन्होंने इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए कहा था, ''यहाँ तक कि भले ही आप राजनीतिक क्षेत्र या सामाजिक क्षेत्र या किसी अन्य क्षेत्र में कार्य करते हैं, यदि आप उसमें सफल होना चाहते हैं, अपने दायित्वों का पूरी तरह से निर्वाह करना चाहते हैं, तो आपके कार्य और समर्पण तथा भक्ति और कर्म में समन्वय होना चाहिए।''

मैं शास्त्री जी की सफलता का रहस्य उनके इसी महत्त्वपूर्ण चिंतन में मानता हूँ। साथ ही यह भी मानता हूँ कि किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के विकास का रहस्य इसी भक्ति और कर्म के सिद्धांत में निहित है।

शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है। उनके ये गुण केवल उनके कार्यों और विचारों में ही अभिव्यक्ति नहीं पाते थे, बल्कि उनको देखने से ही इन सभी भावों का एहसास हो जाता था। उनके अपने व्यक्तित्व में विचारों का अनोखा समन्वय था। वह जो कुछ कहते थे, वही करते थे। जो कुछ भी करते थे, वह एकमात्र राष्ट्र-लाभ की भावना से प्रेरित होकर करते थे। मुझे लगता है कि यह उनके चरित्र की एक बहुत बड़ी विशेषता थी, जिसके कारण देशवासी उन पर इतना अधिक विश्वास करते थे और उन्हें चाहते भी थे। पंड़ित नेहरू की समृद्ध राजनीतिक विरासत को सँभालना और उसे आगे ले जाने का काम कम कठिन नहीं था। लेकिन देश ने उस समय यह साफ-साफ देखा कि इसे सँभालने की ताकत शास्त्री जी में ही है और शास्त्री जी ने अपने निर्मल चरित्र और दृढ़ संकल्प शक्ति द्वारा देश की इस आकांक्षा को पूरा किया।

शास्त्री जी की एक सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि ''वे एक सामान्य परिवार में पैदा हुए थे, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँचे, तब भी वह सामान्य ही बने रहे।'' विनम्रता, सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विशिष्ट प्रकार का आकर्षण पैदा करती थी। इस दृष्टि से शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था और कहना न होगा

कि बापू से प्रभावित होकर ही सन् 1921 में उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़ी थी। शास्त्री जी पर भारतीय चिंतकों, डॉ. भगवानदास तथा बापू का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि वह जीवन-भर उन्हीं आदर्शों पर चलते रहे तथा औरों को इसके लिए प्रेरित करते रहे। शास्त्री जी के संबंध में मुझे बाइबिल की वह उक्ति बिलकुल सही जान पड़ती है कि विनम्र ही पृथ्वी के वारिस होंगे।

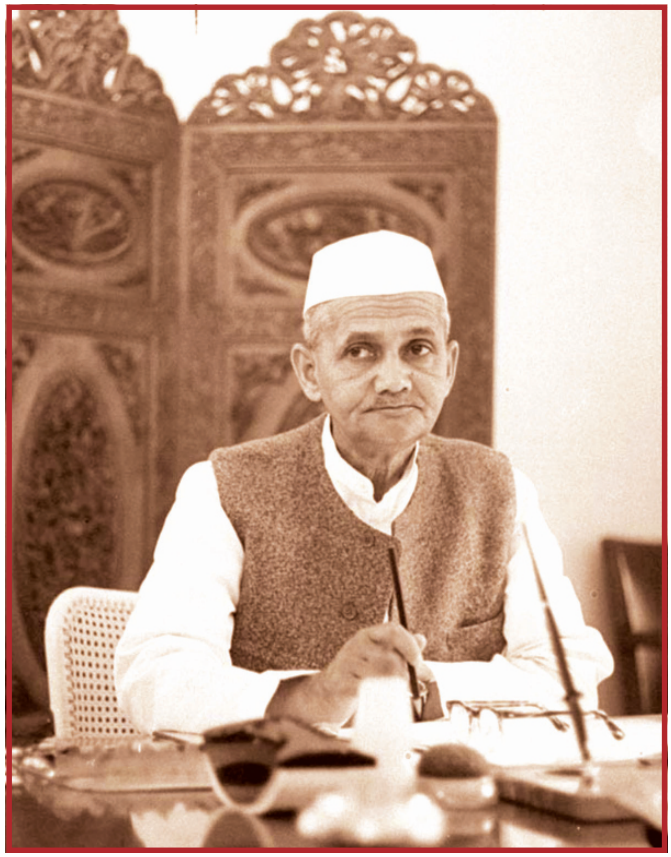

शास्त्री जी ने हमारे देश के स्वतंत्रता-संग्राम में तब प्रवेश किया था, जब वे एक स्कूल में विद्यार्थी थे और उस समय उनकी उम्र 17 वर्ष की थी। गाँधीजी के आह्वान पर वे स्कूल छोड़कर बाहर आ गए थे। इसके बाद काशी विद्यापीठ में उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। उनका मन हमेशा देश की आज़ादी और सामाजिक कार्यों की ओर लगा रहा। परिणाम यह हुआ कि सन् 1926 में वे 'लोकसेवा मंडल' में शामिल हो गए, जिसके वे जीवन-भर सदस्य रहे। इसमें शामिल होने के बाद से शास्त्री जी ने गाँधी जी के विचारों के अनुरूप अछूतोद्धार के काम में अपने आपको लगाया। यहाँ से शास्त्री जी के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया। सन् 1930 में जब 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' शुरू हुआ, तो शास्त्री जी ने उसमें भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा। यहाँ से शास्त्री जी की जेल यात्रा की जो शुरूआत हुई तो वह सन् 1942 के, 'भारत छोड़ो' आंदोलन तक निरंतर चलती रही। इन 12 वर्षों के दौरान वे सात बार जेल गए। इसीसे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके अंदर देश की आज़ादी के लिए कितनी बड़ी ललक थी। दूसरी जेल यात्रा उन्हें सन् 1932 में किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए करनी पड़ी। सन् 1942 की उनकी जेल यात्रा 3 वर्ष की थी, जो सबसे लंबी जेल यात्रा थी।

इस दौरान शास्त्री जी जहाँ एक ओर गाँधी जी द्वारा बताए गए रचनात्मक कार्यों में लगे हुए थे, वहीं दूसरी ओर पदाधिकारी के रूप में जनसेवा के कार्यों में भी लगे रहे। सन् 1935 में वे संयुक्त प्रांतीय काँग्रेस कमेटी के सचिव बनाए गए, इस पद पर वे 1938 तक रहे। किसानों के प्रति उनके मन में विशेष लगाव था। इसलिए उनको सन् 1936 में किसानों की दशा का अध्ययन करनेवाली एक कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया। पूरी लगन के साथ काम करके उन्होंने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें जमींदारी उन्मूलन पर विशेष जोर दिया।

इसके बाद के 6 वर्षों तक वे इलाहाबाद की नगरपालिका से किसी-न-किसी रूप में जुड़े रहे। मैं समझता हूँ कि इस अनुभव ने भी शास्त्री जी के व्यक्तित्व और चिंतन को नागरिकों की समस्याओं से निकट से परिचित कराया। उनके पास ग्रामीण जीवन का अनुभव था। अब इसके साथ ही इलाहाबाद नगरपालिका ने जनसेवा का भी अनुभव जोड़ दिया था। लोकतंत्र की इस आधारभूत इकाई में कार्य करने के कारण वे देश की छोटी-छोटी समस्याओं और उनके निराकरण की व्यावहारिक प्रक्रिया से अच्छी तरह परिचित हो गए थे। कार्य के प्रति निष्ठा और मेहनत करने की अदम्य क्षमता के कारण सन् 1937 में वे संयुक्त प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा के लिए निर्वाचित हुए। सही मायने में यहीं से शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरूआत हुई, जिसका समापन देश के प्रधानमंत्री पद तक पहुँचने में हुआ। शास्त्री जी को भारतीय राजनीति की इतनी सही और गहरी पकड़ थी कि श्रीमती इंदिरा गाँधी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु मानते हुए कहा था कि, ''उन्हीं के मार्गदर्शन में मेरा राजनीतिक जीवन शुरू हुआ।''

देश की आज़ादी के बाद उत्तर प्रदेश में तथा केन्द्र में शास्त्री जी भिन्न-भिन्न पदों पर रहे। उत्तर प्रदेश में उन्हें गृहमंत्री बनाया गया। बाद में पंडित नेहरू के अनुरोध पर वे केन्द्र में आ गए। केन्द्र में उन्होंने रेल और परिवहन, संचार, वाणिज्य, उद्योग और गृह जैसे महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों में मंत्री पद सँभाले। इन पदों पर रहते हुए शास्त्री जी ने अपनी जिस प्रशासकीय दक्षता का प्रमाण दिया, वह हमारे देश के लिए एक उदाहरण है। अपने मंत्रालयों के कार्यों में उनका दृष्टिकोण अत्यंत व्यावहारिक तथा सभी प्रकार की औपचारिकताओं से परे होता था। वे अपने को कभी भी अपने पद के कारण ऊँचा नहीं मानते थे। उनकी बड़ी सीधी-सी धारणा थी कि वे जनता के शासक नहीं, बल्कि जनता के सेवक हैं। ऐसी भावना से कार्य करने के कारण उन्हें अपने मंत्रालय में तो लोकप्रियता मिली ही, साथ-ही-साथ सारे देश में भी लोकप्रियता मिली। इसी लोकप्रियता का परिणाम था कि पंडित नेहरू के निधन के बाद देश ने उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में स्वीकार किया। देश के इस महत्त्वपूर्ण पद पर रहते हुए केवल 19 महीने के छोटे-से-समय में उन्होंने जितनी सफलताएँ और लोकप्रियता प्राप्त की, वह एक उदाहरण हैं। शास्त्री जी के सामने अपना उद्देश्य बिलकुल स्पष्ट था। उसमें किसी प्रकार का धुँधलापन या भटकाव नहीं था।

वे हमारे देश के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे और इन पदों पर रहते हुए स्वाभाविक रूप से वे अधिकार संपन्न भी थे। लेकिन उन्होंने हमेशा आत्मसंयम से काम लिया तथा अधिकारों से अधिक कर्तव्यों को तरजीह दी। शायद इसीलिए शास्त्री जी इतने अधिक लोकप्रिय भी हो सके। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में 19 दिसम्बर, 1964 को छात्रों को संबोधित करते हुए कुछ इसी तरह के विचार व्यक्त किए थे, ''आपके भविष्य की मंजिल चाहे जो कुछ भी हो, आप में से प्रत्येक को यह सोचना चाहिए कि आप सबसे पहले देश के नागरिक हैं। यह आपको संविधान द्वारा प्रदत्त कुछ अधिकार देता है, लेकिन इससे कुछ कर्तव्यों का भी बोझ आता है, जिसे समझना चाहिए। हमारा

देश प्रजातांत्रिक है, जो निजी स्वतंत्रता देता है, लेकिन इस स्वतंत्रता का उपयोग एक व्यवस्थित समाज के हित में स्वेच्छा से लगाए गए प्रतिबंधों के तहत होना चाहिए।'' अधिकार, कर्तव्य और आत्मसंयम के बारे में यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण बात शास्त्री जी ने कही थी, जिसे आज याद रखने की ज़रूरत है।

शब्दार्थ

दायित्व जिम्मेदारी **निष्काम** बिना फल की अपेक्षा, अनासक्त **समर्पण** सौंपना, अर्पित होना **समन्वय** संयोग **निहित** भीतर रहा हुआ, अन्तर्गत **आस्था** श्रद्धा, विश्वास **विरासत** उत्तराधिकार, वारसो (गुज.) **आह्वान** ललकार, चुनौती **उन्मूलन** जड़मूल से नष्ट करना **दक्षता** निपुणता **तरजीह** प्राधान्य, अग्रिमता **प्रदत्त** दिया हुआ **निर्वाचित** चुना हुआ **दीक्षांत** विद्यालयों का प्रमाणपत्र देने का उत्सव

अभ्यास

प्रश्न 1. (अ) कथनों का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ''शास्त्री जी को निष्काम कर्मयोगी कहना अधिक उचित है।''

(2) ''शास्त्री जी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था।''

(3) ''शास्त्री जी का संपूर्ण जीवन श्रम, सेवा, सादगी और समर्पण का अनुपम उदाहरण है।''

प्रश्न 2. अगर महात्मा गाँधी आपके स्वप्न में आये तो आप उनसे कौन-कौन से प्रश्न पूछेंगे ? और महात्मा गाँधी क्या-क्या उत्तर देंगे ? सोचो और बताओ।

प्रश्न 3. संवाद को आगे बढ़ाइए (जिसमें कम से कम आठ से दस प्रश्न और जवाब हों) :

रिया : गाँधी जी का जन्म कब हुआ था?

सुनिल : गाँधी जी का जन्म 2 अक्तूबर, 1869 में हुआ था।

रिया : गाँधी जी ने उच्च शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?

सुनिल : गाँधी जी ने इंग्लैंड से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी।

रिया : .....

प्रश्न 4. निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से अनुलेखन कीजिए :

कोलकाता में हमारा घर एक शांत जगह पर है। हमारे बगीचे की दीवार के उस तरफ एक सँकरी सड़क स्थित है। यह सँकरी सड़क वन प्रांत पर जाकर खत्म होती है। इस सड़क के दोनों और मकान हैं और अधिक यातायात न होने से यह बहुत ही शांत रहती है। सारे दिन इसके आसपास गिलहरियाँ एक-दूसरे का पीछा करती है। हमारे आस-पास के पेड़ों पर अनेक प्रकार के पक्षी दिखाई पड़ते हैं। सारा दिन हवा में पक्षियों का संगीत तैरता रहता है।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) शास्त्री जी ने देश की किस आकांक्षा को पूरा किया? कैसे?

(2) लालबहादुर शास्त्री पर गाँधी जी के आदर्शों का क्या प्रभाव पड़ा?

(3) शास्त्री जी के संसदीय जीवन की शुरूआत कैसे हुई?

(4) छात्रों के दीक्षांत समारोह में शास्त्री जी ने कौन-से विचार व्यक्त किए?

प्रश्न 2. परिच्छेद में रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में से ढूँढ़कर उन्हें शब्दकोश के क्रम में लिखिए :

विद्यार्थी जीवन को मानव जीवन की रीढ़ की हड्डी कहें तो कोई अतिशयोक्ति न होगी । विद्यार्थी काल में मानव में जो संस्कार पड़ जाते हैं, जीवन भर वही संस्कार अमिट रहते हैं । इसीलिए यही काल आधारशिला कहा गया है । यदि यह नींव दृढ़ बन जाती है तो जीवन सुदृढ़ और सुखी बन जाता है । यदि इस काल में बालक कष्ट सहन कर लेता है तो उसे ज्ञान मिलता है, उसका मानसिक विकास होता है, जिस वृक्ष को प्रारंभ से सुंदर सिंचन और खाद मिल जाती है, वह पुष्पित एवं पल्लवित होकर संसार को सौरभ देने लगता है । इस प्रकार विद्यार्थी काल में जो बालक श्रम, अनुशासन, समय एवं नियमन के साँचे में ढल जाता है, वह आदर्श विद्यार्थी बनकर सभ्य नागरिक बन जाता है।

प्रश्न 3. इस इकाई से हम लालबहादुर जी के जीवन में से कौन-कौन से सद्‌गुण ग्रहण कर सकते हैं?

प्रश्न 4. एक था शेर। उसे अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था। जंगल के प्राणियों ने उनको सबक सिखाने की बात सोची। छोटी चींटी बोली, "मैं शेर का घमंड उतार दूँगी। ....."

अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाइए और बताइए कि चींटी ने कैसे शेर का घमंड उतारा होगा?

भाषा-सज्जता

हम इससे पहले अव्यय के बारे में समझ चुके हैं, अब इनके भेद के बारे में समझेंगे।

- **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :**
  - भावेश कम बोलता है।
  - साहिल झट-पट तैयार हो गया।
  - सानिया प्रतिदिन कार्यालय जाती है।
  - वंदना भीतर बैठी थी।

निर्देशित वाक्यों में रेखांकित शब्द अपने साथ आए क्रियापदों की विशेषता प्रकट कर रहे हैं।

'कम' शब्द क्रिया का परिमाण (मात्रा), 'झट-पट' शब्द क्रिया की रीति, 'प्रतिदिन' शब्द क्रिया के काल और 'भीतर' शब्द क्रिया के स्थान संबंधी विशेषता बताते हैं। अर्थात् वे 'क्रियाविशेषण अव्यय' है।

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताता है, उसे 'क्रियाविशेषण अव्यय' कहते हैं। जैसे : आज-कल, कल, साथ, ऊपर, नीचे, खूब, कम, अधिक वे 'क्रियाविशेषण अव्यय' है।

- **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :**
  - राम के साथ लक्ष्मण भी वन में गए।
  - बगीचे **की चारों ओर** दीवार बनी हुई है।
  - हमारे घर के आगे मस्जिद है।
  - मनीषा मानसी से मधुर गाती है।
  - आज साजिद की जगह वाजिद खेलेगा।

निर्देशित वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दें तो स्पष्ट हो जाता है कि -

- ये सभी किसी न किसी संज्ञा के बाद प्रयुक्त हुए हैं।
- ये वाक्य में आए अन्य संज्ञा शब्दों से संबंध का बोध करा रहे हैं।

जैसे -

- **'के साथ'** : 'राम' और 'लक्ष्मण' का
- **'की चारों ओर'** : 'बगीचे' और 'दीवार' का
- **'के आगे'** : 'घर' और 'मस्जिद' का
- **'से मधुर'** : 'मनीषा' और 'मानसी' का
- **'की जगह'** : 'साजिद' और 'वाजिद' का

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त किए जाते हैं तथा अन्य संज्ञा, सर्वनाम या अन्य शब्दों के साथ संबंध का बोध कराते हैं वे 'संबंधबोधक अव्यय' है।

- **निम्नलिखित वाक्य पढ़िए :**
  - नुरोद्दीन, संजय और निलेश गांधीनगर गए।
  - रमेश ने परिश्रम किया इसीलिए प्रथम आया।
  - यद्यपि वह निर्धन है, तथापि उदार है।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द दो शब्दों, दो वाक्यों या दो वाक्यांशो को जोड़ने का काम कर रहे हैं।

दो वाक्यों, वाक्यांशो अथवा शब्दों को परस्पर मिलानेवाले शब्द को 'समुच्चय बोधक अव्यय' कहा जाता हैं। जैसे : और, तथा, किंतु, अथवा, इसीलिए आदि।

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :**
  - अरे! क्या बात करते हो।
  - हाय! ये क्या हो गया?
  - वाह! कितना सुन्दर बालक।
  - ठहर! आगे मत बढ़।
  - बाप रे! इतना लम्बा साँप।
  - अरे! सुनते हो?

  उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द शोक, विस्मय, हर्ष, क्रोध, भय आदि मन के भावों को प्रकट करते हैं।

जो शब्द विस्मय (आश्चर्य), हर्ष, प्रशंसा, घृणा, शोक, भय आदि भावों को प्रकट करने के लिए हमारे मुख से स्वतः निकल पड़ते हैं, वे 'विस्मयादिबोधक अव्यय' कहे जाते हैं।

- **निम्नलिखित वाक्यों में से अव्यय-छाँटिए :**
  - आज मैंने बहुत कम खाना खाया।
  - अंजली, सोनल के आगे बैठी है।
  - मीनाक्षी और सालवी गाँव जा रही हैं।
  - अरे! ये क्या कर रहे हो?

  आपने जो 'अव्यय' छाँटे हैं, उनके आधारित अन्य वाक्य बनाइए।

योग्यता विस्तार

- 'मेरा प्रिय नेता' विषय पर निबंध लिखिए।
- देशनेताओं के चित्र चार्ट पर चिपकाइए।
- ऐसे डाक टिकटों का संग्रह कीजिए जिनमें देशनेता के चित्र हों।
- देशनेता के जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाइए।
- 'नमक कानून तोड़ो आंदोलन' और 'हिन्द छोड़ो' आंदोलन के बारे में सचित्र जानकारी प्राप्त कीजिए।
- महापुरुष और उनके सूत्रों की सूची बनाइए।

- निम्नांकित कोष्ठक में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दस अमर क्रांतिकारियों के नाम छिपे हैं। यदि आप रिक्त स्थानों में अपनी बुद्धि से सही अक्षर भर सकें, तो वे नाम स्पष्ट हो जाएँगे। जरा उठाइए अपनी कलम और इस्तेमाल कीजिए अपनी बुद्धि।

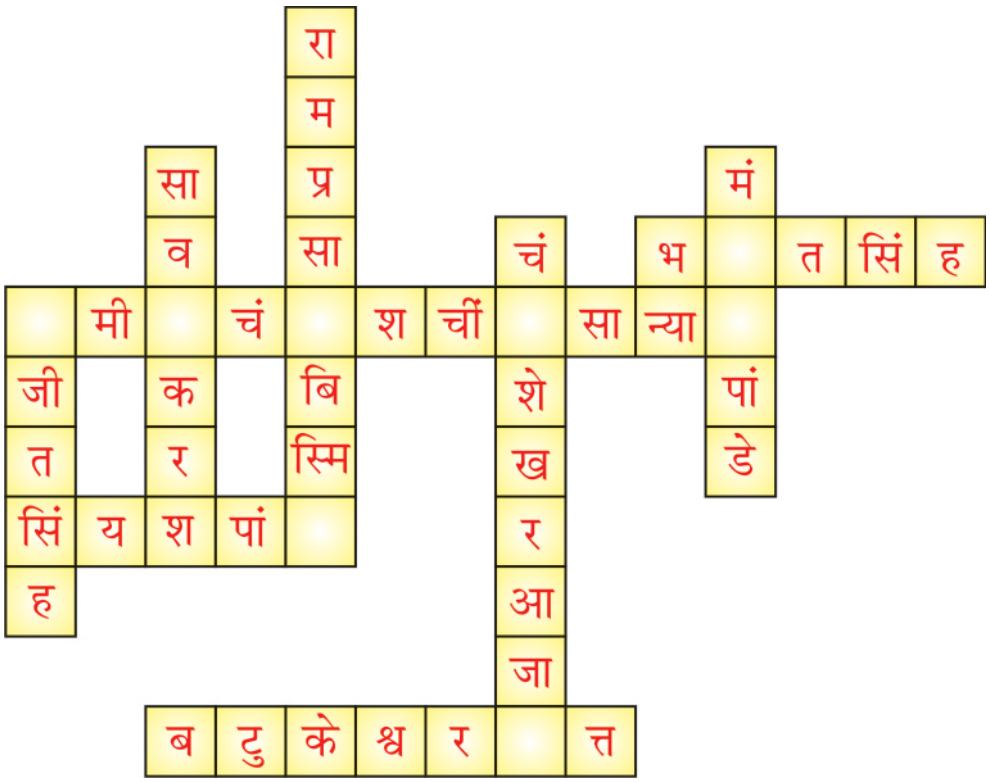

5 दोहें

कबीर, रहीम, तुलसीदास

प्रस्तुत दोहों में कबीर, रहीम, तुलसी ने बहुत सारी जीवनोपयोगी बातें बताई हैं। प्रस्तुत दोहों में दानप्रियता, संतोष, समानता, अच्छी संगति की महत्ता, विनम्रता, परिश्रम, प्रेम आदि जीवनमूल्यों को निर्देशित किया गया है।

कबीर

संत कबीर १५वीं शताब्दी के कवि हैं। आपने हिन्दू और मुसलमानों को उनकी गलतियों के लिए फटकारा है और दोनों को हिल-मिलकर रहने का उपदेश दिया है।

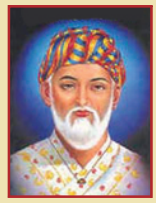

रहीम

आपका पूरा नाम **अब्दूल रहीम ख़ानख़ाना** है। आप बड़े उदार और अनुभवी थे। हिन्दी में आपने बोधप्रद दोहे लिखे हैं।

तुलसीदास

संत तुलसीदास १६वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रामभक्त कवि हैं। आपने 'रामचरित मानस' नामक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा है।

कबीर

(1) साँई इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय॥

(2) बिना विचारे जो करे, सो पाछो पछताय।
काम बिगाडे आपनो, जग में होत हँसाय॥

(3) कबीरा खड़ा बाजार में, माँगे सब की ख़ैर।
ना काहु से दोसती, ना काहु से बैर॥

रहीम

(1) रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहिं।
उनते पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि॥

(2) जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपट रहत भुजंग॥

(3) बड़े बड़ाई ना करैं, बडो न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल॥

तुलसी

(1) आवत हिय हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी वहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेघ॥

(2) विद्या धन उद्यम बिना, कहौ जु पावे कौन।
बिना डुलाये न मिले, ज्यौं पंखा की पौन॥

शब्दार्थ

कुटुम परिवार **ख़ैर** कुशल **नाद** आवाज़, ध्वनि **कुसंग** बूरी संगत **भुजँग** साँप, सर्प **नैनन** आँखों में **हरषै** खुशी **कंचन** सोना **मेह** मेघ **उद्यम** परिश्रम **पौन** हवा **ख़ानख़ाना** सरदारों का सरदार, एक उपाधि

अभ्यास

प्रश्न 1. शिक्षक की सहायता से 'दोहों' का भावपूर्ण गान कीजिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

उद्यम, प्रकृति, ख़ैर, कुसंग, कंचन, जपमाला, दु:ख, भुजंग, हरषै

प्रश्न 3. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) यदि भगवान आपको कुछ माँगने के लिए कहे तो आप क्या माँगना चाहेंगे?
(2) अच्छे व्यक्ति की संगति से आप को क्या लाभ हो सकते हैं?
(3) लोग धर्म के नाम पर कौन-से आड़म्बर करते हैं?
(4) लोग किन-किन कारणों से भीख माँगते हैं?

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कबीर साँई से कितना माँगते हैं?
(2) बिना सोचे कार्य करने से क्या होता है?
(3) चंदन और भुजंग के उदाहरण द्वारा रहीम क्या कहते हैं?
(4) रहीम बड़े लोग की क्या विशेषता बताते हैं?
(5) तुलसीदास किस के घर नहीं जाना चाहते?

प्रश्न 2. इस इकाई के दोहों में से आप कौन-से सद्‌गुण ग्रहण करेंगे?

प्रश्न 3. निम्नलिखित जवाब मिले ऐसी पहेलियों का निर्माण किजीए :

(1) तोता (2) पतंग (3) चिड़िया

योग्यता विस्तार

- विद्यालय की बालसभा में उक्त कवियों के दोहों पर आधारित 'बालकवि दरबार' प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।
- इन कवियों के जीवन से जुड़े रोचक / प्रेरक प्रसंगों को सुनाइए।
- इन कवियों के अन्य दोहों का संकलन कीजिए।
- इन कवियों की अन्य रचनाओं के बारे में जानिए।

पुनरावर्तन-1

प्रश्न 1. अपने मित्र को निबंधलेखन प्रतियोगिता में प्रथम आने पर बधाई पत्र लिखिए।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन करके उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) दास : .....

वाक्य : .....

(2) धोबी : .....

वाक्य : .....

(3) स्वामी : .....

वाक्य : .....

(4) विद्वान : .....

वाक्य : .....

(5) बाबू : .....

वाक्य : .....

(6) बूढ़ा : .....

वाक्य : .....

(7) शेर : .....

वाक्य : .....

(8) पंड़ित : .....

वाक्य : .....

(9) भैंस : .....

वाक्य : .....

(10) लेखक : .....

वाक्य : .....

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों का वचन परिवर्तन करके उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) गमला : .....

वाक्य : .....

(2) माला : .....

वाक्य : .....

(3) कहानी : .....

वाक्य : .....

(4) तिथि : .....

वाक्य : .....

(5) ड़िबिया : .....

वाक्य : .....

(6) चूड़ी : .....

वाक्य : .....

(7) सहेली : .....

वाक्य : .....

(8) सेना : .....

वाक्य : .....

(9) चीज़ : .....

वाक्य : .....

(10) वस्तु : .....

वाक्य : .....

प्रश्न 4. निम्नलिखित इकाइयों को पढ़कर उनमें से आपको जीवन में उतारने जैसी कौन-कौन सी बातें अच्छी लगीं? उनकी सूची तैयार कीजिए।

- इकाई 13 : कर्मयोगी लालबहादुर शास्त्री
- इकाई 12 : मत बाँटो इंसान को

- अन्य देशनेताओं के जीवन और कार्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकालय का उपयोग करके हस्तलिखित अंक तैयार कीजिए।

6 तूफ़ानों की ओर

शिवमंगल सिंह 'सुमन'
5 अगस्त, 1915 को ग्राम झगरपुर, जिला उन्नाव, उत्तर प्रदेश में।
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए., पीएच.डी.
अनेक अध्ययन संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा हिन्दी संस्थान में उच्चतम पदों पर कार्य किया तथा अनेक देशों की यात्रा की।
1974 में 'मिट्टी की बारात' पर साहित्य अकादमी तथा 1993 में भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित। 1974 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से सम्मानित।
हिल्लोल, जीवन के गान, युग का मोल, प्रलय सृजन, विश्व बदलता ही गया, विंध्य हिमालय, मिट्टी की बारात, वाणी की व्यथा, कटे अँगूठों की बंदनवारें।
उद्यम और विकास।
प्रकृति पुरुष कालिदास।

प्रस्तुत कविता में कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने सदा संघर्षमय रहकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी है। जिस तरह आग में रहकर सोना निखरता है, उसी तरह बाधाएँ हमें जीने की नई राह दिखाती हैं तथा आगे बढ़ने के लिए हमारे इरादों को मजबूत बनाती हैं।

इस कविता में धैर्य, गतिशीलता, साहस और संघर्षरत रहना जैसे मूल्य उजागर किए गए हैं।

तूफ़ानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

आज सिंधु ने विष उगला है;
लहरों का यौवन मचला है;
आज हृदय में और सिंधु में
साथ उठा है ज्वार।
तूफ़ानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

लहरों के स्वर में कुछ बोलो,
इस अंधड़ में साहस तोलो।
कभी-कभी मिलता जीवन में
तूफ़ानों का प्यार।
तूफ़ानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

यह असीम, निज सीमा जाने,
सागर भी तो यह पहचाने।
मिट्टी के पुतले मानव ने
कभी ना मानी हार।
तूफ़ानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

सागर की अपनी क्षमता है,
पर माँझी भी कब थकता है,
जब तक साँसों में स्पंदन है,
उसका हाथ नहीं रुकता है,
इसके ही बल पर कर डाले
सातों सागर पार।
तूफ़ानों की ओर घुमा दो, नाविक निज पतवार।

शब्दार्थ

नाविक नाव चलानेवाला **निज** अपना **पतवार** नाव चलाने की तिकोनी लकड़ी, चप्पू **ज्वार** तूफ़ान (समुद्र में पानी का बढ़ना) **अंधड़** आँधी **असीम** सीमाहीन (जिसकी कोई सीमा न हो) **क्षमता** शक्ति, योग्यता **स्पंदन** चेतना, धड़कन **बल पर** सहारे

अभ्यास

प्रश्न 1. शुद्ध उच्चारण कीजिए :

तूफ़ान, सिंधू, यौवन, हृदय, अंधड़, मिट्टी, स्पंदन

प्रश्न 2. 'तूफ़ानों की ओर...' इस काव्य का समूहगान कीजिए।

प्रश्न 3. प्रश्नों के मौखिक उत्तर दीजिए :

(1) ''तूफ़ानों की ओर घूमा दो नाविक निज पतवार'' ऐसा कवि ने क्यों कहा है?

(2) ''सागर भी तो यह पहचाने'' में क्या पहचान ने की बात कही गई है?

(3) समस्या आने पर हमें क्या करना चाहिए?

(4) ''इस अंधड में साहस तोलो'' का क्या अर्थ है?

प्रश्न 4. कविता को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

किताबें कुछ कहना चाहती हैं...

किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं।
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं।
परियों के किस्से सुनाती हैं।
किताबों में रॉकेट का राज़ है।
किताबों में साइंस की आवाज़ है।
किताबों का कितना बड़ा संसार है।
किताबों में ज्ञान की भरमार है।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

(1) प्रश्न के उचित विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए :

(क) किताबों में कौन चहचहाता है?

तोता ☐ मोर ☐ चिड़ियाँ ☐

(ख) किताबें किसके किस्से सुनाती हैं?

राजा ☐ परियाँ ☐ किसान ☐

(ग) किताबों में किसके लहलहाने की बात है?

खेतियाँ ☐ झरनें ☐ बाग ☐

(2) नीचे दिए हुए शब्दों का वाक्य में उपयोग कीजिए :

परियाँ, किस्सा, संसार, भरमार

(3) प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(क) किताबों में क्या-क्या है?

(ख) हमें किताबें क्यों पढ़नी चाहिए?

(ग) "किताबों में ज्ञान की भरमार है।" ऐसा कवि ने क्यों कहा है?

(घ) इस काव्य को उचित शीर्षक दीजिए।

प्रश्न 5. चित्र देखकर दिए गए शब्दों की मदद से छोटी-सी कहानी बनाकर अपने वर्ग में सुनाइए :

सुबह, घर, मेला, खिलौनेवाला, ढ़ेर सारे, बच्चे, जगाना, खरीदा, खुश, मुर्गा, रात, बक्सा, बाँग

प्रश्न 6. आपके गाँव में बाढ़ आए तो उस समय आप क्या करेंगे? गाँव छोड़कर चले जायेंगे या गाँववालों की मदद करेंगे? अपने विचार कारण सह बताइए।

प्रश्न 7. नीचे दिए गए वाक्यों में से रेखांकित शब्दों के विशेषण बनाइए और उनका वाक्य में उपयोग कीजिए :

(1) उनकी ईमानदारी से सारा नगर परिचित है।

(2) हमारी अमीरी लोगों को उपयोगी होगी ।

(3) हिमालय पर्वत की ऊँचाई देखने लायक है।

(4) लक्ष्मीबाई वीरता पूर्ण लड़ी।

(5) दूसरों की बुराई करना पाप है।

प्रश्न 8. कहावतों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

(1) उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

(2) न रहेगा बाँस, न बजेंगी बाँसुरी।

(3) चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात।

(4) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) कवि ने मनुष्य की कौन-सी विशेषता की ओर इशारा किया है?

(2) ज्वार कहाँ-कहाँ उठा है?

(3) समुद्र ने कैसा रूप धारण किया है?

(4) कवि ने मनुष्य को मिट्टी का पुतला क्यों कहा है?

(5) माँझी कब तक कार्य करता है?

प्रश्न 2. इस कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

योग्यता विस्तार

- इस कविता में कवि ने मनुष्य को संघर्ष से विमुख न होकर जीवन संग्राम में जुड़े रहने की प्रेरणा दी है। इसी विचारधारा के आधार पर अपने कक्षाकक्ष में बातचीत कीजिए।
- कक्षाकक्ष में कुछ ऐसी कविताओं को सुनाइए, जिनमें परिश्रम, धैर्य और सहयोग तथा प्रसन्न रहने की बात कही गई हो।
- अपने जीवन में ऐसी स्थिति आई हो जिसमें आपको बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा हो। आपने अपनी मुश्किल कैसे हल की? लिखिए।

7 हार की जीत

सुदर्शन

[**जन्म** : सन् 1896 ई.; **निधन** : सन् 1968 ई.]

'सुदर्शन' का मूल नाम बदरीनाथ शर्मा था। आपका जन्म पंजाब के सियालकोट में हुआ था। जब आप छठवें दर्जे में थे, आपने प्रथम कहानी लिखी थी। प्रेमचंद की तरह आपने भी उर्दू में लेखन प्रारंभ किया। तत्पश्चात् हिन्दी में लिखने लगे। नाटक, कहानी तथा उपन्यास लिखकर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया।

प्रस्तुत कहानी सुदर्शन जी द्वारा लिखित एक पौराणिक कथा है। जो मानव-भावनाओं पर आधारित है। बाबा भारती के अनोखे घोड़े की चर्चा डाकू खड़गसिंह के कानों तक पहुँचती है। वह धोखे से घोड़ा ले जाता है। परंतु बाबा भारती की एक बात उसे घोड़ा लौटाने पर मजबूर कर देती है। उसी बात ने उस डाकू का हृदय परिवर्तन कर दिया, इसी बात पर यहाँ प्रकाश डाला गया है।

इस कहानी में विनम्रता, उदारता, पश्चात्ताप, दयाभाव आदि मूल्यों को समाविष्ट किया गया है।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बहुत ही सुंदर और बलवान था। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाक़े में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रूपया, माल असबाब, ज़मीन आदि अपना सब कुछ छोड़ दिया था। यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव के बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। ''मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा'' उन्हें ऐसा लगने लगा था। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, ऐसे चलता है, जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या के समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़गसिंह उस इलाक़े का कुख्यात डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, ''खड़गसिंह, क्या हाल है?''

खड़गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, ''आपकी दया है।''

''कहो, इधर कैसे आ गए?''

''सुलतान की चाह खींच लाई।''

''विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।''

''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''

''कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।''

''क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।''

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, ''परंतु बाबा जी, इसकी चाल न देखी तो क्या!''

बाबा जी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर ले गए। घोड़ा वायुवेग में उड़ने लगा। घोड़े की चाल देखकर उसके हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझने लगता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, ''बाबा जी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।''

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड़गसिंह का डर लगा रहता था परंतु कई महीने बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखो में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और वह मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आई – ''ओ बाबा! इस कँगले की सुनते जाना।''

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा – ''बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामवाला यहाँ से तीन मील है। मुझे वहीं जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर बैठा लिया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक तो चुप रहे। इसके पश्चात कुछ निश्चय कर पूरे बल से चिल्लाकर बोले – ''ज़रा ठहर जाओ!''

खड़गसिंह ने आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया। उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा – ''बाबा जी, यह घोड़ा अब न दूँगा।''

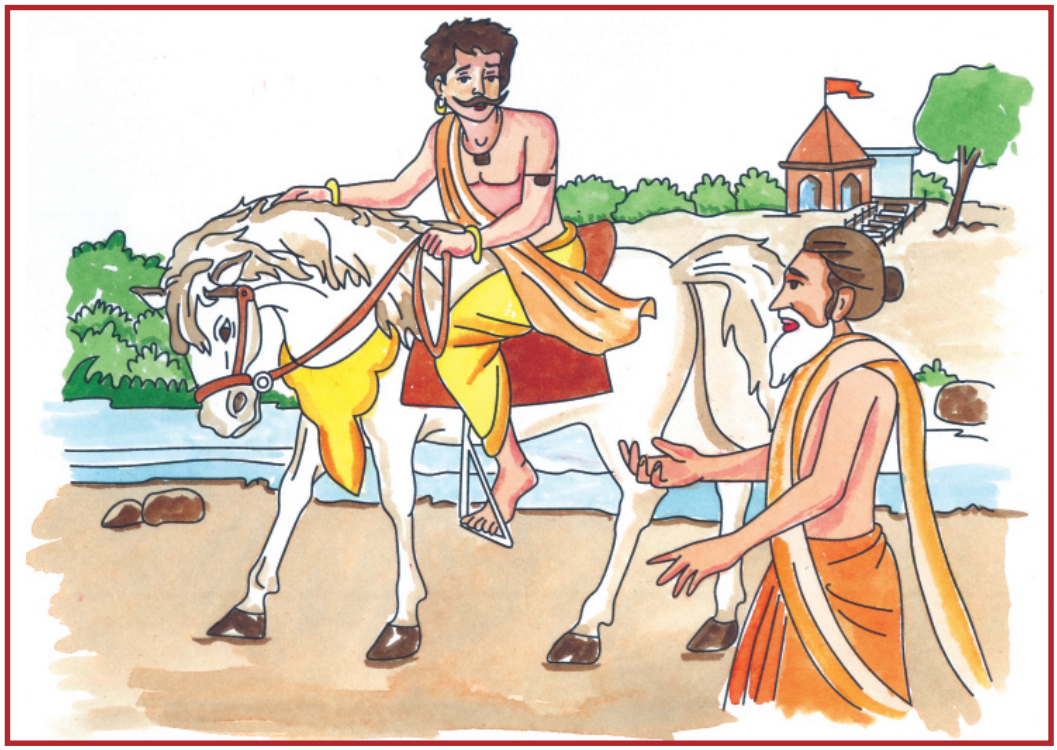

''मगर एक बात सुनते जाओ।''

खड़गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है। फिर कहा – ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए नहीं कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।''

''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रगट न करना।''

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा – ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के चेहरे पर गड़ा दीं और पूछा – ''बाबा जी, इसमें आपको क्या डर है?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया – ''लोगों को अगर इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब का विश्वास न करेंगे।'' यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, पवित्र भाव हैं। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे – ''इसके बिना मैं न रह सकूँगा।'' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर, रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख़्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का बना दिया। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवो की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले - ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।''

शब्दार्थ

करुणा दया **कीर्ति** यश **प्रशंसा** तारीफ़ **विचित्र** अनोखा **अधीर** बेचैन, उतावला **सहसा** अचानक **कंगाल** निर्धन **नेकी** भलाई **कुख्यात** बदनाम **चाप** पग ध्वनि **घृणा** नफरत **अभिलाषा** इच्छा **छवि** चित्र, तसवीर **वायुवेग** हवा की गति **प्रतिक्षण** हर घड़ी **विस्मय** आश्चर्य **प्रयोजन** उद्देश्य **कंगला** कंगाल, निर्धन **अपाहिज** विकलांग **बाँका** सुंदर और बहादुर **असबाब** वस्तु, सामान **अस्तबल** तबेला, घुड़साल **खरहरा** वह कंघी या बुरुश जिससे घोडे के रोंए साफ किए जाते है **बाग** घोड़े की लगाम

मुहावरें

लट्टू होना मोहित होना **फूला न समाना** अति प्रसन्न होना **आँख नीची होना** लज्जित होना **फूट-फूट कर रोना** बहुत रोना **साँप लोटना** ईर्ष्या होना **सिर मारना** अत्यधिक मानसिक परिश्रम करना

अभ्यास

प्रश्न 1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) खड़गसिंह का हृदय परिवर्तन क्यों हुआ?

(2) ''अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह नहीं मोड़ेगा।'' ऐसा बाबा भारती ने क्यों कहा?

(3) यदि बाबा भारती की जगह आप होते तो क्या करते?

(4) ''इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' ऐसा बाबा भारती ने क्यों कहा?

प्रश्न 2. मान लो आपके गाँव की बैंक में लूट हुई। लूट किस गलती के कारण हुई होगी? लूटेरे कौन हो सकते हैं? इस घटना का अनुमान लगाइए और लूँट या चोरी से बचने के लिए क्या-क्या सावधानी रखनी चाहिए? अपने दोस्तों के साथ चर्चा कीजिए।

प्रश्न 3. परिच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

सोना अचानक आई थी, परंतु वह अब तक अपनी शैशवावस्था भी पार नहीं कर सकी थी। सुनहरे रंग का, रेशमी लच्छों की गाँठ के समान उसका कोमल लघु शरीर था, छोटा-सा मुँह और बड़ी-बड़ी पानीदार आँखें। देखती तो लगता था कि अभी छलक पडेंगी। लंबे कान, पतली सुडौल टाँगें, जिन्हें देखते ही प्रसुप्त गति की बिजली की लहर देखनेवालों की आँखों में कौंध जाती थी। सब उसके सरल, शिशु रूप से इतने प्रभावित हुए कि किसी चंपकवर्णा रूपसी के लिए उपयुक्त सोना, सुवर्णा आदि नाम उसका परिचय बन गए।

परंतु उस बेचारे हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी व्यथा-कथा है, जिससे मनुष्य निष्ठुरता गढ़ती है। बेचारी सोना भी मनुष्य की इसी निष्ठुर मनोरंजनप्रियता के कारण अपने अरण्य परिवेश और स्वजाति से दूर मानव-समाज में आ पड़ी थी। प्रशांत वनस्थली में जब अलस भाव से मंथन करता हुआ मृग-समूह शिकारियों की आहट से चौंककर भागा, तब सोना की माँ सद्य: प्रसूता होने के कारण भागने में असमर्थ रही। सद्य: जात मृग शिशु तो भाग नहीं सकता था। अत: मृगी माँ ने अपनी संतान को अपने शरीर की ओट में सुरक्षित रखने के प्रयास में अपने प्राण दिए।

शब्दार्थ

लच्छा गुच्छा **शावक** हिरन का बच्चा **सद्य: प्रसूता** तुरन्त जन्मा हुआ

(1) सही उत्तर पर ✓ का निशान लगाइए :

(क) सोने का रंग कैसा था?

लाल ☐ पीला ☐ सुनहरा ☐

(ख) मृग-समूह किसकी आहट से चौंक कर भागा?

पटाखे की ☐ शिकारियों की ☐ बादल की ☐

(2) रिक्त स्थान भरिए :

(क) सोना अब तक अपनी ..... भी पार नहीं कर सकी थी।

(ख) हरिण-शावक की कथा तो मिट्टी की ऐसी ..... है, जिसे मनुष्य की निष्ठुरता गढ़ती है।

(3) इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

आहट - ..... शैशवावस्था - .....

(4) इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :

लघु - ..... मानव - .....

(5) हरिण-शावक सोना की शारीरिक बनावट कैसी थी?

प्रश्न 4. एक दिन बादशाह अकबर ने अपने दरबारियों से पूछा, ''बताओ दुनिया में सबसे अधिक शक्तिशाली कौन है?'' दरबारियों का जवाब क्या होगा और बीरबल ने क्या कहा होगा?

कहानी आगे बढ़ाओ।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. दिए गए शब्दों की सहायता से रिक्त स्थान भरिए :

(1) खड़गसिंह इस इलाके का ..... डाकू था। **(प्रसिद्ध, कुख्यात)**

(2) अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरों के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय ..... हो गया था। **(धीर, अधीर)**

(3) ''बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका ..... हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''
(दास, स्वामी)

प्रश्न 2. किसने, किससे कहा ?

(1) ''दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।''
- अपाहिज ने बाबा भारती से
- बाबा भारती ने अपाहिज से

(2) ''लोगों को अगर इस घटना का पता लग गया, तो वे किसी गरीब का विश्वास न करेंगे।''
- बाबा भारती ने खड़गसिंह से
- खड़गसिंह ने बाबा भारती से

प्रश्न 3. प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में लिखिए :

(1) खड़गसिंह बाबा भारती के पास क्यों आया?
(2) बाबा भारती किस बात से ड़र गए थे?
(3) सुलतान पर सवार खड़गसिंह ने बाबा भारती से क्या कहा?

प्रश्न 4. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) बाबा भारती अपना समय कैसे बिताते थे?
(2) बाबा भारती को किसका ड़र लगने लगा? क्यों?
(3) खड़गसिंह ने सुलतान को कैसे प्राप्त किया?
(4) घोड़े को वापस आया देखकर बाबा भारती ने घोड़े से कैसा वर्ताव किया?

प्रश्न 5. टिप्पणी लिखिए :

बाबा भारती की महानता

प्रश्न 6. दिए गए शब्दों के अर्थ से शब्द-पहेली पूर्ण कीजिए :

नीचे ↓

(1) इच्छा
(2) उद्देश्य
(3) अचानक
(4) दया

सीधे →

(1) बेचैन
(2) बड़ाई
(3) सत्य
(4) नभ
(5) नफरत

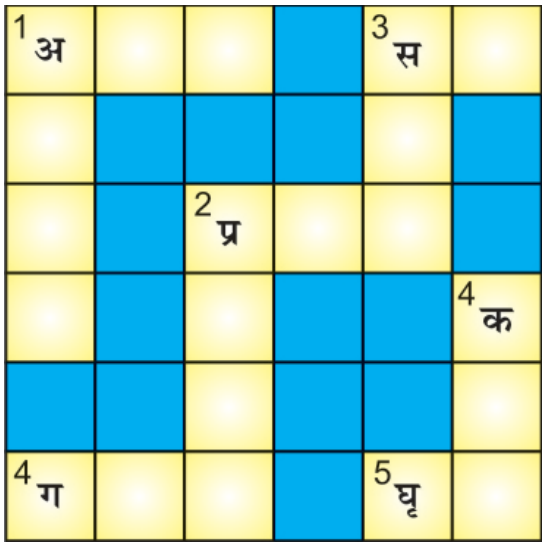

प्रश्न 7. दिए गए शब्दों के विलोम शब्द लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :

सुंदर, जमीन, संध्या, गरीब, विश्वास

प्रश्न 8. दिए गए शब्दों में उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए :

(प्रति, निर्)

(1) ..... + दिन = ... (2) ..... + आधार = ...

(3) ..... + मूल = ... (4) ..... + कूल = ...

(5) ..... + जल = ... (6) ..... + दोष = ...

प्रश्न 9. दिए गए शब्दों में प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए :

(इक, त्व)

(1) मुख + ... = ... (2) मनुष्य + ... = ...

(3) भूत + ... = ... (4) मम + ... = ...

(5) समाज + ... = ... (6) सम + ... = ...

प्रश्न 10. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण पहचानकर उनका अन्य वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जैसे – खड़गसिंह इस इलाके का कुख्यात डाकू था।

विशेषण : कुख्यात

वाक्य : कुख्यात आदमी से लोग डरते हैं।

(1) कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।

(2) परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था।

(3) बाबा भारती ने ठंडे़ जल से स्नान किया।

(4) अपने प्यारे घोड़े से लिपटकर रोने लगे।

(5) बाबा भारती प्रसिद्ध साधू थे।

योग्यता विस्तार

- इस कहानी को एकांकी के रूप में लिखकर प्रार्थना संमेलन में मंचन कीजिए।
- साधु, डाकू, अपाहिज और घोड़े के मुखौटे अपने कक्षाकक्ष में शिक्षक की सहायता से बनाइए।
- आपके विस्तार में कोई संत पुरुष या प्रेरणादायी व्यक्ति हो तो उनके बारे में लिखिए।

8 हँसना मना है।

चुटकुले हास्य एवं व्यंग्य विनोद का एक सशक्त माध्यम है। चुटकुले का प्रमुख गुण यह होता है कि उनका स्वरूप छोटा और संवाद छोटे-छोटे होते हैं। चुटकुले पढ़ने और सुनने से हमारा तनाव दूर होता है। इस दृष्टि से चुटकुले तनाव दूर करने का सशक्त माध्यम है।

(1) चुहा हाथी के पास गया और बोला, ''हाथी दादा, हाथी दादा। क्या आप मुझे आपकी लूँगी दो दिन के लिए दोगे?''

हाथी : तुम उसका क्या करोगे?

चुहा : मेरे बेटे की शादी है, उसमें तंबु लगाना है।

(2)

(3) **ग्राहक** – आपके पास टूथ ब्रश है?

दुकानदार – ब्रश नहीं है, पेस्ट है।

ग्राहक – अच्छा, आपके पास पाउड़र होगा?

दुकानदार – पाउड़र नहीं है, क्रीम है।

ग्राहक – क्रीम नहीं चाहिए। टोर्च मिलेगी?

दुकानदार – वह तो कल ही खत्म हो गई। मोमबत्ती है।

ग्राहक – खैर ताला तो होना ही चाहिए।

दुकानदार – है, दूँ?

ग्राहक – जी नहीं, उसे अपनी दुकान पर लगाकर आप घर पर आराम कीजिए।

(4)

(5) तीन दोस्त आपस में गप-शप लड़ा रहे थे। प्रश्न हुआ कि किसी दिन सोकर उठने पर हमको यह पता चले कि हम लखपति बन गये हैं तो हम क्या करेंगे?

एक ने कहा – हम तो सीधे पैरिस जायेंगे और खूब मजे करेंगे।

दूसरे ने कहा – हम किसी लाभप्रद कारोबार में रूपया लगायेंगे।

तीसरा बोला – मैं तो फिर सोने की कोशिश करूँगा और तब तक सोता रहूँगा जब तक करोड़पति न बन जाऊँ।

(6)

(7) **प्रश्न** – रेल किराया इतना अधिक बढ़ जाने पर भी यात्रियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसका कारण बताइए।

उत्तर – इसका कारण यह है कि हर एक आदमी यही सोचता है कि अगले साल किराया और बढ़ जाएगा इसलिए अभी यात्रा कर ली जाए।

(8) शिक्षक ने सभी छात्रों को घास खाती हुई गाय का चित्र बनाने को कहा। सभी छात्र चित्र बना रहे थे, कल्पेश ने अपना पन्ना कोरा छोड़ दिया।

शिक्षक – कल्पेश, इस चित्र में घास कहाँ है?

कल्पेश – घास को तो गाय खा गई।

शिक्षक – अच्छा, तो गाय कहाँ है?

कल्पेश – वह तो घास खाकर चली गई।

(9)

अभ्यास

प्रश्न 1. हर एक छात्र को कक्षाकक्ष में मनपसंद चुटकुला सुनाने का मौका दीजिए।

प्रश्न 2. कोई ऐसा प्रसंग सुनाइए जब आप खूब हँसे हों।

प्रश्न 3. पाँच चुटकुले बनाकर सुनाइए।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. मातृभाषा में अनुवाद कीजिए :

(1) एक साहब टैक्सी में बैठे और ड्राईवर से बोले – जरा तेज़ चलो वरना मेरा चित्रहार निकल जाएगा।

ड्राईवर बोला – अगर मैं ज्यादा तेज़ चला तो कहीं ऐसा न हो कि आपके और मेरे चित्रों पे हार चढ़ जाए।

(2) शिक्षक मोहन से - मोहन, ताजमहल कहाँ पर है?

मोहन ने कुछ उत्तर नहीं दिया सो शिक्षक ने उसे बेंच पर खड़ा कर दिया। मोहन बेंच पर खड़े होकर, साहब यहाँ पर से भी नहीं दिखाई देता।

प्रश्न 2. राष्ट्रभाषा में अनुवाद कीजिए :

(1) **રમેશ :** આવી જિંદગી કરતાં તો મોત સારું.

(અચાનક યમદૂત આવી ગયા... અને બોલ્યા, તારો જીવ લેવા માટે મને આદેશ મળેલો છે.)

રમેશ : લો, બોલો...! હવે તો માણસ મજાક પણ નહીં કરી શકે શું ?

(2) બ્રિજેશભાઈ બસમાં ઊભા રહીને મુસાફરી કરી રહ્યા હતા. એક મુસાફરે તેમને બેસવા માટે જગ્યા કરી આપી.

બ્રિજેશભાઈ : મારે બેસવું નથી. મારે ખૂબ ઉતાવળ છે.

योग्यता विस्तार

प्रकल्प कार्य (Project work) : चुटकुला संग्रह

- दूरदर्शन / चैनल पर प्रसारित हो रहे हास्य कार्यक्रम को देखिए। जैसे 'गम्मत गुलाल', 'तारक महेता का उलटा चश्मा' आदि।
- रेडियो पर प्रसारित चुटकुले / हास्य-प्रसंग / मज़ेदार कहानियाँ सुनिए।
- अखबार, सामयिक आदि में से कार्टून चित्र काटकर उनका संग्रह बनाइए।
- व्यंग्य चित्रों को अपनी पाठशाला के बुलैटिन बोर्ड पर प्रदर्शित कीजिए।
- 'हास्य दरबार' कार्यक्रम का आयोजन कीजिए।

9 उलझन-सुलझन

पहेलियाँ बूझना एक कला है; पहेलियों से छात्रों की विचारशक्ति का विकास होता है। यहाँ पहेलियों के माध्यम से इस शक्ति का विकास करने का प्रयत्न किया गया है।

(1) एक फूल काले रंग का, सिर पर सदा सुहाता
तेज धूप वर्षा में खिलता, छाया में मुरझाता।

(2) चोर नहीं डाकू नहीं, नहीं कहीं की रानी
बत्तीस सिपाही घेरे रहते, तन-मन पानी-पानी

(3) नाम मेरा तीन अक्षर का, रहनेवाला सागर तट का
खाने में आता हूँ काम, बोलो बच्चो मेरा नाम।

(4) आदि कटे तो दशरथ सुत होता, मध्य कटे तो आम,
अंत कटे तो काटु लकड़ी, बोलो मेरा नाम।

(5) दो सखियाँ दोनों चंचल, फिरती फाटक खोले,
सो जाए तो सपने देखें, हँसे खुशी में, दु:ख में रो लें।

(6) दादा है पर दादी नहीं, भाई है पर बहन नहीं
नव है पर दस नहीं, रोजी है पर रोटी नहीं।

(7) दिए गए चित्रों में चित्र के शब्द ढूँढिए :

शब्दार्थ

सिर मस्तिष्क **सुत** पुत्र **तट** किनारा **आदि** प्रारंभ

अभ्यास

प्रश्न 1. शिक्षक के साथ पहेलियों का गान कीजिए।

प्रश्न 2. दिए गए शब्द के उत्तर मिले ऐसी पहेलियाँ बनाइए :

(1) पेड़ (2) आम (3) बारिश (4) हाथी

(5) मोर (6) मोबाइल (7) बादल

प्रश्न 3. दिए गए चित्र में हमारे कौन-कौन से देशभक्तों की तसवीरें उभरती हैं? - खोजिए और लिखिए :

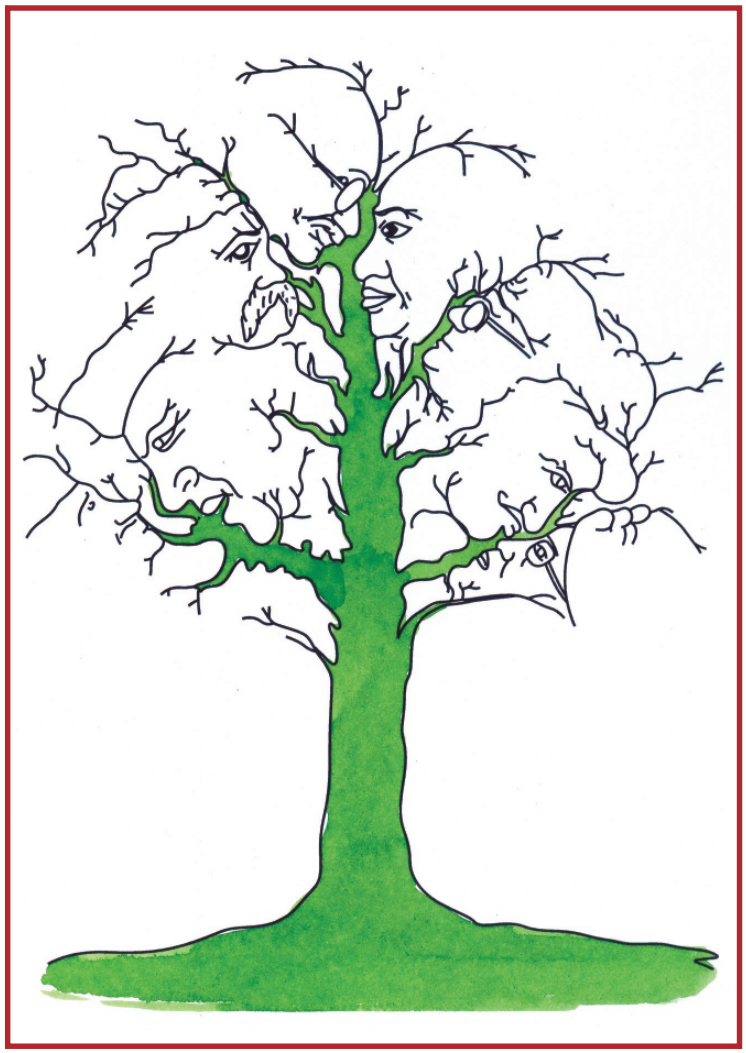

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 4. इस चित्र में 'च' से शुरू होनेवाली कितनी चीज़ें हैं?

मैंने ढूँढ़ीं .....

.....

'च' से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीज़ें हमसे छूट गईं? उनके चित्र बनाओ।

स्वाध्याय

प्रश्न 1. इस चित्र में 'म' से शुरू होनेवाली कितनी चीज़ें हैं?

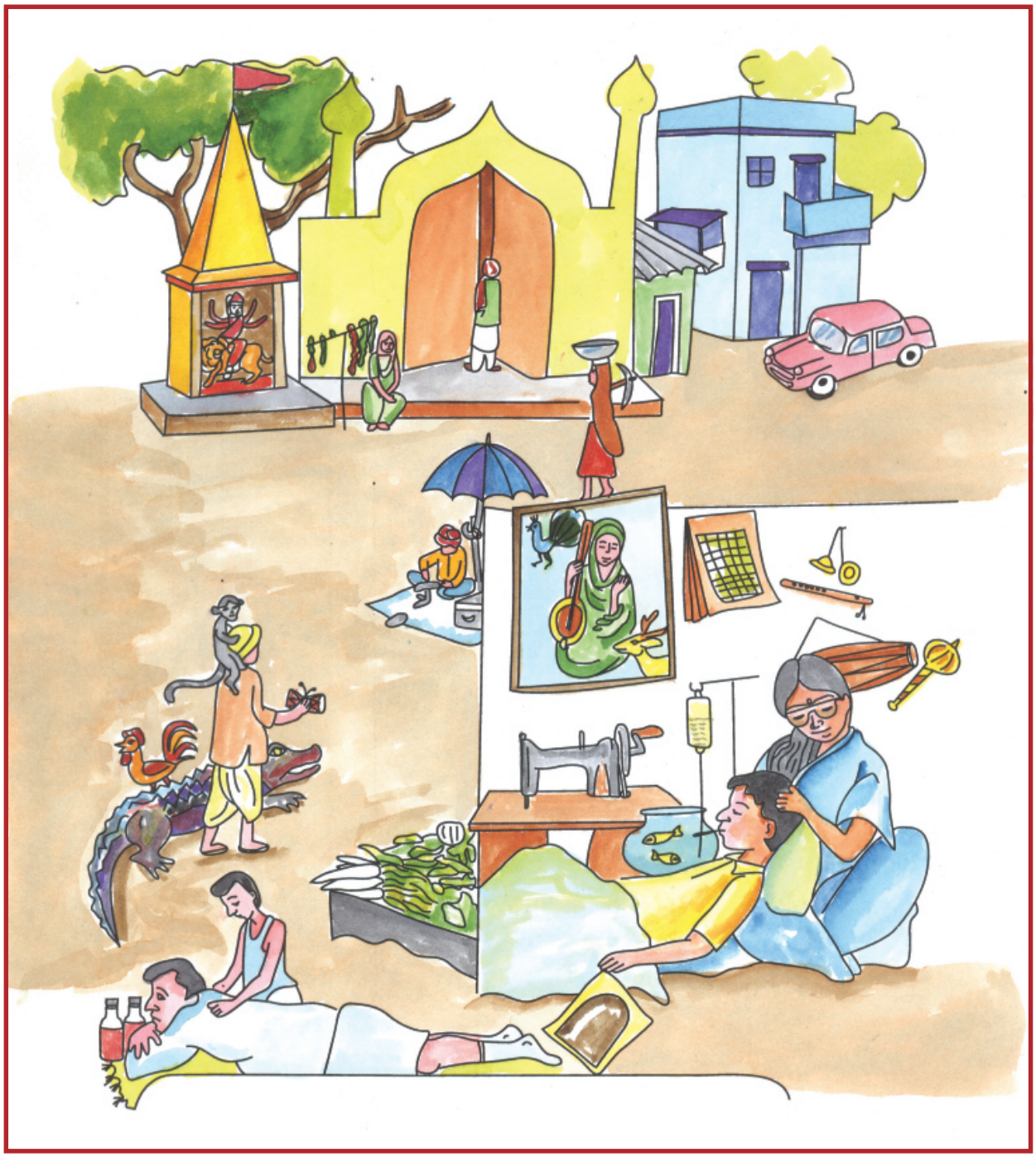

मैंने ढूँढ़ीं .....

.....

'**म**' से शुरू होने वाली कौन-कौन-सी चीज़ें हमसे छूट गईं? उनके चित्र बनाओ।

योग्यता विस्तार

- शब्द पहेली का निर्माण कीजिए।
- ऐसा चित्र बनाइए जिनमें प्राणी, पक्षी, फूल और यातायात के साधन आदि दिखाई देते हैं।
- निम्नलिखित शब्दचित्र देखिए और उनके नाम गुजराती और हिन्दी में लिखिए :

....

....

....

❁

पुनरावर्तन-2

प्रश्न 1. निम्नलिखित परिच्छेद का शुद्ध रूप से पठन और लेखन कीजिए :

अच्छी सोसाइटी यदि मिले तो उसका बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और इससे आत्मसंस्कार होता है। सोसाइटी में सम्मिलित होने से हमारी समझ बढ़ती है, हमारी विवेकबुद्धि तीव्र होती है, हमारी सहानुभूति गहरी होती है, हमें अपनी शक्तियों के उपयोग का अभ्यास होता है। हम अपने साथियों के साथ मिलकर बढ़ना सीखते हैं। इसी प्रकार हम दूसरों का ध्यान रखना उनके लिए कुछ स्वार्थ त्याग करना, सद्‌गुणों का आदर करना और सदाचार की प्रशंसा करना सीखते हैं। आत्मसंस्काराभिलाषी युवक को उस चाल-व्यवहार की अवहेलना न करनी चाहिए जो भले आदमियों के समाज में आवश्यक समझा जाता है।

प्रश्न 2. रूपरेखा के आधार पर कहानी लिखिए :

एक कंजूस के पास काफी सोना - बक्से में भरकर खेत में गाड़ देना - रोज रात के समय गिनना - चोर का देख लेना - अशरफियों के बदले पत्थर भर देना - दूसरे दिन कंजूस का रोना - एक बूढ़े की सलाह, 'अब पत्थर गिन लेना।'

प्रश्न 3. चित्र देखकर दिए गए शब्दों की सहायता से चार पंक्तियाँ लिखिए :

बच्चे, खुश, खेल, चिड़ियाँ, डाली, मुस्कराते, सुंदर, खरगोश

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न 4. एक दिन निखिल के पिताजी कुछ काम से बाहर गए थे। अपनी माँ के साथ वह सोया हुआ था। आधी रात को जब उसकी नींद उड़ गई तो देखा घर में चोर घूसे हुए थे। तिजौरी से गहने चुरा रहे थे। कुछ देर सोचने के बाद निखिल को उपाय सूझा....

(अब आप इस कहानी को आगे बढ़ाइए)

स्व-अध्ययन

- हमारे देश में असंख्य नदियाँ हैं । इनमें से बारह प्रमुख नदियों के नाम नीचे के चित्र में दिए हैं । वे नदियाँ मुख्यतः जिन प्रदेशों की भूमि सींचती हैं, उनके नाम हैं - उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, जम्मू-कश्मीर, बिहार, प. बंगाल, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल ।

  झटपट बुद्धि लगाइए और बारह नदियों के नाम खोजिए ।

  आपकी सुविधा के लिए इतना बता दें कि उन नदियों के नाम निम्न अक्षरों से शुरू होते हैं - ग, स, द, क, त, प, य और ब ।

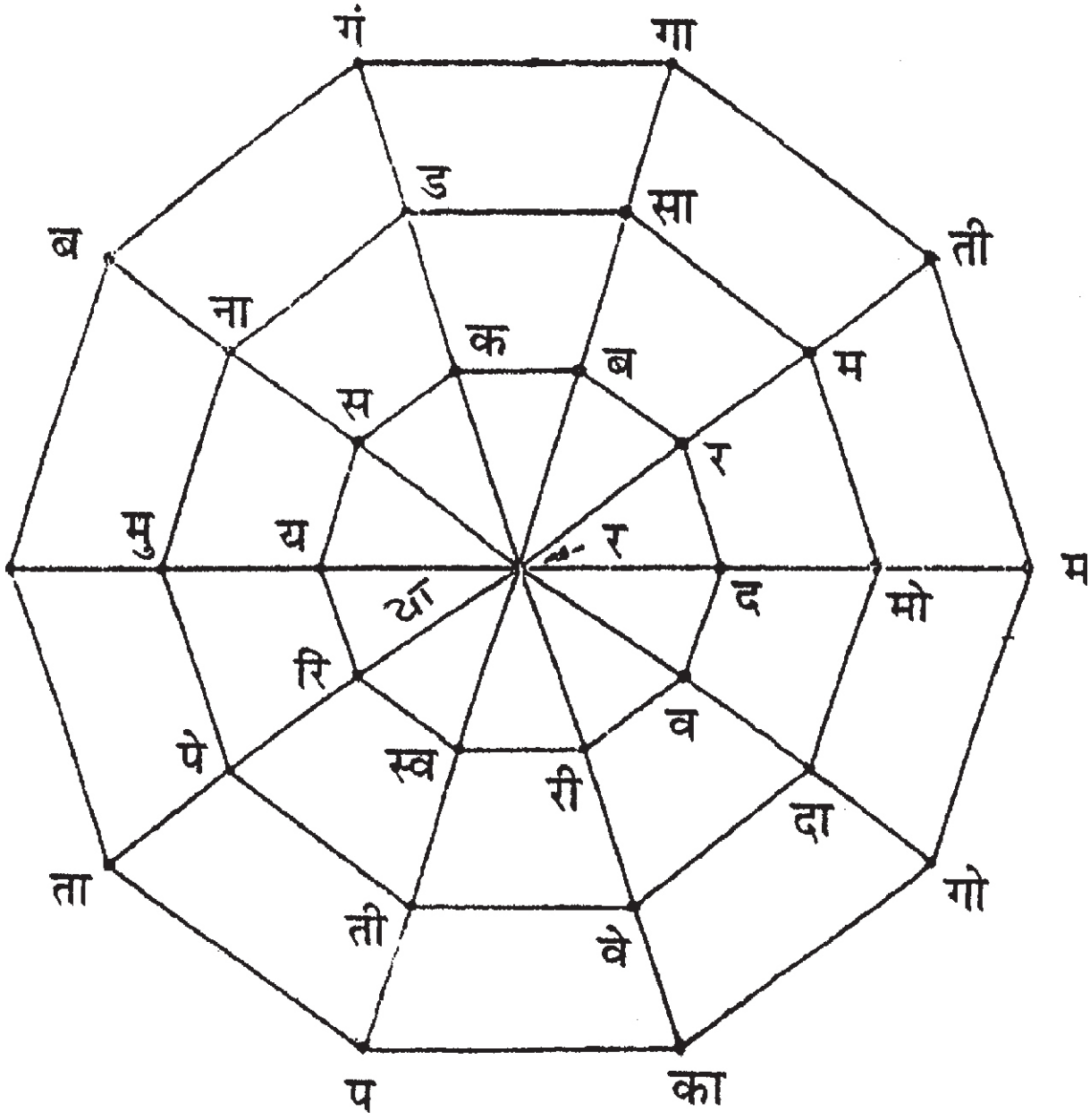

स्व–अध्ययन

- अपने क्षेत्र में पेड़-पौधों के अनियंत्रित कटाव को रोकने के लिए जिलाधीकारी को एक पत्र लिखिए ।

स्व-अध्ययन

- पाठ्यपुस्तक में दिए गए दोहें के अलावा कबीर, रहीम और तुलसीदास जी के और तीन-तीन दोहें पुस्तकालय में जाकर खोजें और लिखिए ।

स्व-अध्ययन

- अख़बार में पढ़े हुए या दूरदर्शन से सुने हुए पाँच विज्ञापनों के बारे में लिखिए ।